प्रयास

सत्यमेव जयते

वार्षिक पत्रिका

वर्ष 2016

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

हिन्दी दिवस 2015 की तस्वीरें

प्रयास

षष्टम अंक

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखंड,
सी–1/105, वैभव पैलेस, इन्दिरा नगर, देहरादून – 248006

सत्यमेव जयते

राजनाथ सिंह
RAJNATH SINGH
गृह मंत्री, भारत
HOME MINISTER, INDIA

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के अवसर पर आप सब को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं !

भाषा किसी भी राष्ट्र की सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर की संवाहक होती है और साथ ही संपूर्ण राष्ट्र की एकता और अखंडता की एक महत्वपूर्ण कड़ी भी होती है । इस संबंध में भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने हिंदी भाषा के बारे में अपना उद्‌गार व्यक्त किया था कि "हिंदी को राष्ट्र भाषा घोषित करने में एक दिन भी खोना देश को भारी सांस्कृतिक नुकसान पहुंचाना है । स्व-भाषा के बिना स्वराज का बोध नहीं हो सकता।" राष्ट्रीयता, भारतीयता और एकता हिंदी का मूल स्वर है और राजभाषा हिंदी सरकार एवं संपूर्ण देश की आम जनता के बीच में संवाद की भाषा होकर अपनी सार्थक भूमिका निभा रही है । इस प्रकार हिंदी को राष्ट्रीय स्वाभिमान का अंग एवं प्रेरणा स्रोत के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त समझते हुए भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। इसी अनुक्रम में 26 जनवरी, 1950 में लागू भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार यह व्यवस्था की गई कि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी होगी एवं इसकी लिपि देवनागरी होगी।

विश्व में भारत भूमि में सर्वप्रथम सभ्यता एवं संस्कृति का उद्‌गम हुआ। जिस भारत भूमि में सांख्य दर्शन, योग, दशमलव प्रणाली, ज्योतिष विज्ञान, ग्रह-नक्षत्रों की दूरी, काल की गणना जैसे ज्ञान से परिपूर्ण विषयों पर उत्कृष्ट साहित्य का सृजन हुआ हो, उस देश की भाषाओं का अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी जड़ें कितनी गहरी, समुन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिकतापूर्ण हो सकती हैं । भारतीय भाषाओं की इन्हीं विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ सरकार को यह दायित्व सौंपा गया कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए और उसका विकास करे ताकि हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके ।

आज की उदारीकृत अर्थव्यवस्था के युग में देश को अशिक्षा, बेरोजगारी और गरीबी से उबारने के लिए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे अनेक क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की नितांत आवश्यकता है । लेखक और प्रकाशक राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को सभी भारतीयों तक पहुंचाने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं ।

भारत सरकार के सभी कार्यालयों में सरकारी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि यह सभी के लिए बोधगम्य हो तथा इसका प्रयोग बहु-आयामी हो सके । यह याद रखना आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य राजकीय कार्य मूल रूप से हिंदी में करना है । मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा । इस दिशा में अपेक्षित परिणाम प्राप्त करने के लिए दो महत्वपूर्ण कदम उठाए जाने आवश्यक हैं । पहला, मैं विशेष रूप से केंद्र सरकार में कार्यरत सभी वरिष्ठ अधिकारियों से आग्रह करता हूं कि वे स्वयं अपना रोज़मर्रा का सरकारी कामकाज हिंदी में करें ताकि अन्य सभी कार्मिकों को भी ऐसा करने की प्रेरणा मिले। दूसरा, सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए मैं केंद्र सरकार के सभी प्रशिक्षण संस्थानों के प्रमुखों से अनुरोध करता हूं कि वे राजभाषा विभाग द्वारा 'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्रों के लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन हिंदी माध्यम में करें । इस प्रयोजनार्थ व्यावहारिक कार्य-योजना बनाकर गंभीर प्रयास करने की आवश्यकता है ।

मैं यह अपील करता हूं कि राजभाषा विभाग को भेजी जाने वाली हिंदी की तिमाही प्रगति रिपोर्टों व अन्य अपेक्षित रिपोर्टों में वास्तविक और तथ्यपरक आंकड़े एवं सूचनाएं ही दी जाएं। संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है, किंतु संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी प्रकार दृढ़तापूर्वक किया जाना चाहिए जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन किया जाता है ।

आइए ! हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर हम यह दृढ़ संकल्प लें कि हम सभी अपना अधिकाधिक कार्य पूर्ण उत्साह, लगन और गर्व के साथ राजभाषा हिंदी में करेंगे । मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक, सार्थक एवं अथक प्रयासों से हम अपना लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त करेंगे और देश में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग को नए आयाम देंगे ।

जय हिंद !

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2016

(राजनाथ सिंह)

सत्यमेव जयते

महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड

संदेश

मेरे लिए यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रयास' के षष्टम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के अभियान का महत्वपूर्ण अंश है। इसके रोचक रचनायुक्त नियमित प्रकाशन राजभाषा के प्रति अधिकारियों और कर्मचारियों के लगाव को दर्शाते हैं। मैं चाहता हूँ कि कार्यालय में हिंदी में काम–काज की जो रफ्तार है, वो आगे चलकर भी कायम रहे।

सम्पर्क भाषा के रूप में 'हिंदी' देश की जान है। अनेकता में एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी हिंदी सामाजिक एकता बनाए रखने में अहम भूमिका निभा रही है। मुझे विश्वास है कि देश के प्रमुख सरकारी संस्थानों और संगठनों में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए आयोजित कार्यक्रमों, गोष्ठियों व सम्मेलनों के द्वारा राजभाषा के रूप में इसके विकास को गति मिलेगी। पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए सम्पादकीय मंडल बधाई का पात्र है।

शुभकामनाएं!

(सौरभ नारायन)
महालेखाकार

सत्यमेव जयते

वरिष्ठ उपमहालेखाकार
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड, देहरादून

संदेश

मुझे हर्ष है कि इस कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'प्रयास' के षष्टम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पूर्व के भांति इस अंक में भी अधिकारियों/कर्मचारियों ने अपनी साहित्यिक सराहनीय प्रतिभा का परिचय दिया है। आशा है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएं आपको रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगेंगी।

कार्यालय की गृह पत्रिका 'प्रयास' का प्रकाशन और विभिन्न क्षेत्रों में इसका वितरण अन्य कार्यालयों के साथ संपर्क स्थापित करने का कुशल माध्यम है और इस प्रक्रिया में हम एक–दूसरे की हिन्दी से संबंधित क्रिया–कलापों से अवगत होते हैं। आशा करता हूँ की प्रगति के पथ पर यह पत्रिका यूँ ही चलती रहेगी।

पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए सम्पादकीय मंडल को बधाई और इसके उत्तरोत्तर विकास हेतु शुभकामनाएं।

अनुभव

(अनुभव कुमार सिंह)
वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
एवं
प्रधान संपादक 'प्रयास'

सम्पादकीय.....✍

आदरणीय पाठकगण,

प्रयास 'षष्टम अंक' आपके समक्ष प्रस्तुत है। आशा है पिछले अंक की तरह यह अंक भी आपको भायेगा। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार के दृष्टिकोण से पत्रिका में समाहित मूल रचनाएं बहुत अहमियत रखती हैं। सम्पर्क भाषा के रूप में 'हिंदी' देश की जान है। अनेकता में एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी हिंदी हम सब की पहचान है। अतः अपनी पहचान को व्यापक बनाने के लिए राजभाषा हिंदी को विश्व स्तर पर प्रभावशाली बनाने का प्रयास हमें जारी रखना होगा।

कार्यालयीन स्तर पर 'प्रयास' पत्रिका का प्रकाशन हमें इस अभियान में एक कदम आगे बढ़ाता है। 'प्रयास' एक आईना है जो रचनाकारों के विभिन्न लेखों, कविताओं आदि के साथ हमारे बीच मौजूद है। साफ छवि के लिए आईने का साफ होना जितना जरूरी है, उतना ही जरूरी उसके सामने खड़ा व्यक्ति भी, क्योंकि यदि वह व्यक्ति खुद ही साफ–सुथरा न हुआ तो आईने पर आरोप लगाना व्यर्थ हो जाएगा। यहाँ पत्रिका आईने की भूमिका में कितनी सही है, हमें आपकी प्रतिक्रिया से अवगत होगा। आशा है छवि के रूप में इसके रचनाकार आपको अच्छे और प्रशंसनीय लगेंगे।

एक पत्रिका के दायरे से बाहर निकल कर भी हमें हिंदी की आवश्यकता पर ध्यान देना चाहिए। सरकार अपनी प्राथमिकताओं में राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार

को इसलिए रखती है कि जन–जन की इस भाषा के द्वारा सरकारी योजनाओं को समझने का अवसर अधिकाधिक लोगों को मिले और वे लाभान्वित हों। सरकारी दफ्तरों के माध्यम से लोक जीवन के स्तर में सुधार और आपसी विश्वसनीयता समाज कल्याण के लिए नितांत जरूरी है। यह कार्य तब तक सम्पन्न नहीं हो सकता जब तक लोग इस भावना को भली–भांति समझ नहीं लेते और आम नागरिक को समझाने के लिए संपर्क भाषा के रूप में 'हिंदी' ही महत्वपूर्ण कड़ी है।

आइये हम सब मिलकर सशक्त, समृद्ध और बोधगम्य हिंदी के सपने को साकार करें। आपकी प्रतिक्रिया इस पत्रिका को आगे बढ़ाने में अहम भूमिका निभाएगी।

जय हिंद! जय हिंदी!

राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी

पत्रिका परिवार

संरक्षक	:	श्री सौरभ नारायन, महालेखाकार
प्रधान संपादक	:	श्री अनुभव कुमार सिंह, वरिष्ठ उपमहालेखाकार
परामर्शदाता	:	श्री पी.एस. रावत, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
संपादक	:	श्री संजय राजदान, लेखापरीक्षा अधिकारी
उपसंपादक	:	श्री राकेश रंजन मिश्रा, हिन्दी अधिकारी
संकलनकर्ता	:	सुश्री रेखा, कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री सुशील कुमार, लेखापरीक्षक
सहायक	:	श्रीमति रेशू चौधरी, डी.ई.ओ

मुख्य पृष्ठ : हेमकुण्ड साहिब, उत्तराखण्ड

पार्श्व पृष्ठ : फूलों की घाटी, चमोली (उत्तराखण्ड)

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

पत्रिका के प्रति आपके अनमोल विचार

आपके द्वारा प्रेषित राजभाषा हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के 5वें अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका के मुख अत्यंत आकर्षनीय एवं सुंदर है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय तथा रोचक हैं। श्री मदन सिंह गर्व्याल की भारत के वित्तीय प्रहरी, श्री संतोष कुमार की **बरगद का पेड़**, सुश्री रेखा की **बेबस किसान लाचार कृषि**, श्री मुकेश कुमार की **विवाह एक अटूट बंधन** एवं श्री पवन कुमार की **मेरा गाँव** जैसी रचनाएं अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका के अच्छे संपादन के लिए प्रकाशन एवं संपादक मंडल को बहुत बहुत बधाई। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते है।

कार्यालय–महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
ओड़िशा, भुवनेश्वर

आपके कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" का पंचम अंक वर्ष 2015 की एक प्रति प्राप्त हुई, तदहेतु धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण के साथ साथ पृष्ठों की भी साज–सज्जा अत्यन्त आकर्षक हैं। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ उच्च स्तरीय, पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री मुकेश कुमार की रचना **"विवाह एक अटूट बंधन"** सुश्री रेखा की **"बेबस किसान, लाचार कृषि"**, श्री संतोष कुमार गुप्ता की **"बरगद का पेड़"** और **"एयरपोर्ट पे धरना** (हास्य–व्यंग्य", श्री पी.के. श्रीवास्तव का लेख **"सत्ता एवं लोकतन्त्र",** सुश्री हेमलता गुप्ता की कविता **"नारी मन"**, श्री अश्विनी कुमार पाण्डेय की रचना **"धर्म और वैमनस्याता"** एवं श्रीमती हिना सलीम की कविता **"बिटिया"** अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन एवं संकलन हेतु सम्पादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाँ।

भारतीय लेखा तथा लेखा–परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.), पश्चिम बंगाल

आपके द्वारा भेजी गई हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के पंचम (5वाँ) अंक की एक–प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। "प्रयास" के सभी लेख प्रभावी, प्रासंगिक और एक से बढ़कर एक है। कविताएँ भी भावपूर्ण एवं सार्थक तथा मन को छु लेने वाली है। श्री हरिओम द्वारा लिखित लेख **"बढती जनसंख्या–घटतें संसाधन",** श्री प्रभाकर दुबे द्वारा लिखित कविता **बेटियाँ,** श्री राकेश रंजन मिश्रा द्वारा लिखित लेख **"शिक्षा में अनुशासन की भूमिका"**, श्री अश्विणी कुमार पाण्डेय द्वारा लेख **"धर्म**

और वैमनस्यता", श्रीमति हेमलता गुप्ता द्वारा लिखित कविता **नारी मन**, सुश्री रेखा द्वारा लिखित लेख **बेबस किसान लाचार कृषि**, श्री संतोष कुमार गुप्ता द्वारा लिखित हास्य व्यंग्य **एयरपोर्ट पे धरना** और श्रीमति हिना सलीम द्वारा लिखित कविता **बिटिया** सराहनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं।

पत्रिका के संपादक मंडल एंव रचनाकारों को सफल संपादन एवं लगातार प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामना देता हूँ।

कार्यालय महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) पश्चिम बंगाल

आपके कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद। पाठकों की राजभाषा के प्रति निष्ठा के मूल्य के साथ पत्रिका के साथ पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए बधाइयाँ।

पत्रिका में समाहित सभी कविता, कहानी एवं आलेख न सिर्फ मनोरंजक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक एवं रोचक भी हैं। श्री लक्ष्मण सिंह जी की **"पहाड़ से पलायन", "उजड़ते गाँव, कराहते पहाड़"** में जहाँ वर्तमान में शहरी जीवन के प्रति आकर्षण को दर्शाया गया है वहीं सुश्री रेखा जी की **"बेबस किसान, लाचार कृषि"** में भारत के अन्नदाता, किसान की दयनीय स्थिति का अत्यंत मार्मिक वर्णन मिलता है। साथ ही साथ हमें इस स्थिति का सामना करने का सफल सुझाव भी प्राप्त होता है। संतोष कुमार गुप्ता जी की **"एयरपोर्ट पे धरना,** (हास्य व्यंग्य", हेमलता गुप्ता जी की **"नारी मन"** महावीर सिंह रावत जी की **"व्यथा"** भी अत्यंत रोचक एवं पठनीय हैं। अश्विनी कुमार पाण्डेय जी की **"धर्म और वैमनस्यता"**, मदन सिंह गर्ब्याल की **"सरहद के इस पार और उस पार"** भी काफी अच्छे, रुचिकर एवं ज्ञावनर्धक हैं। सुशील देवली जी की **"गजल"** बहुत ही प्रशंसनीय है। पवन कोठारी की **"राजभाषा"** भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार को एक नई दिशा प्रदान करती है।

पत्रिका की पृष्ठ सज्जा, मुद्रण एवं आवरण पृष्ठ भी अत्यंत सुरुचिपूर्ण हैं। पत्रिका के उत्तम सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई।

पत्रिका के अविरल प्रकाशन एवं उतरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकानाओं सहित।

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की प्रति/प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई। पत्रिका की रूप सज्जा तथा रचनाएं राजभाषा हिन्दी के प्रति आपकी सक्रियता व राजभाषा निष्ठा की परिचायक है। इससे सरकारी कामकाज में राजभाषा हिन्दी के प्रति लोगों में निश्चित ही प्रेरणा तथा उत्साह का संचार होगा। श्री लक्ष्मण सिंह का लेख **"पहाड़ के पलायनः उजड़ते गाँव, कराहते पहाड़"**, सुश्री रेखा का लेख **"बेबस किसान, लाचार कृषि"** एवं मदन सिंह गर्ब्याल का लेख **सरहद के इस पार और उस पार** रोचक एवं पठनीय है। श्री अजय त्यागी की कविता **"जिन्दगी"**, श्री प्रभाकर दुबे की कविता **"बेटियाँ"** और श्री महावीर सिंह रावत की कविता "व्यथा" भावपूर्ण हैं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–द्वितीय
मध्य प्रदेश, ग्वालियर

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषिक हिंदी पत्रिका प्रयास का पंचम अंक पत्र संख्या हिन्दी/गृह पत्रिका –प्रयास/8–2015–16/26 प्राप्त हुआ। पत्रिका में अंतर्निहित सभी रचनाएँ अत्यंत शिक्षाप्रद, नीतिपरक एवं रोचक हैं। ये सभी रचनाएं अत्यंत सराहनीय और प्रासंनिक भी है।

पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई एवं इसकी प्रगति और अगले अंक के प्रकाशन हेतु शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा लेखा–परीक्षा विभाग
महा निदेशक, लेखा–परीक्षा का कार्यालय,
केन्द्रीय, कोलकाता

आपके पत्र सं. हिन्दी/गृह पत्रिका–प्रयास/8–2015–16/84 दिनांक 30.09.2015 के साथ आपके कार्यालय की पत्रिका प्रयास का पंचम अंक प्राप्त हुआ।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ एवं राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनमोहक हैं। इस अंक में समाविष्ट रचनाएँ पठनीय, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय है। विशेषकर श्री लक्ष्मण सिंह का लेख **पहाड़ से पलायन : उजड़ते गांव, कराहते पहाड़,** सुश्री रेखा का लेख **बेबस किसान, लाचार कृषि**, श्री अशोक कुमार का लेख **यदि कबीर आज जिन्दा होते** तथा तथा श्री एम.एस.गर्ब्याल का लेख **भारत के वित्तिय प्रहरी विचारप्रधान**, ज्ञानवर्धक एवं रोचक लेख हैं। **शिव शक्ति, नारी मन, जिन्दगी तथा व्यथा कविताएँ** प्रशंसनीय हैं। बरगद का पेड़ कहानी मर्मस्पर्शी तथा शिक्षाप्रद है।

पत्रिका के श्रेष्ठ संपादन व संकलन हेतु संपादक मंडल को साधुवाद तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) प्रथम का कार्यालय, मध्य प्रदेश
"लेखा भवन", ग्वालियर–474 002

आपके पत्र सं.– हिन्दी/गृह पत्रिका–प्रयास/8–2015–16/64, दिनांक 30/09/2015 द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के 5 वें अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ/कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। सुश्री हेमलता गुप्ता द्वारा लिखित **"नारी मन"** तथा श्री पवन कोठारी द्वारा लिखित **"राजभाषा हिन्दी"** सराहनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं।

महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
झारखण्ड का कार्यालय, राँची – 834002

आपके कार्यालय द्वार प्रेषित हिन्दी पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका में संकलित सभी लेख पठनीय एवं सरस हैं। मुखपृष्ठ एवं पार्श्व पृष्ठ पर क्रमशः **गंगोत्री धाम एवं बद्रीनाथ धाम** का छायांकन मोहक है। संकलित लेख एवं रचनाओं में श्री विनीत कुमार राही की **"गजल"**, श्री पी०के० श्रीवास्तव की **"सत्ता एवं लोकतंत्र"**, हेमलता गुप्ता की **"नारी मन"** एवं श्री संतोष कुमार की **"बरगद का पेड़"** प्रशंसनीय है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)–प्रथम,
उत्तर प्रदेश, इलाहाबाद

आपके कार्यालय की हिन्दी की गृह पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका का प्रस्तुत अंक, उसके उत्कृष्ट कलेवर, मुद्रण, साज–सज्जा, छायाचित्र तथा श्रेष्ठ रचनाओं के समावेश के कारण अत्यंत ही आकर्षक एवं रोचक बन पड़ा है।

श्री मुकेश कुमार का लेख **"विवाह एक अटूट बंधन"**, श्रीमती संजु रानी का लेख **"सफलता के सात सूत्र"**, श्री प्रभाकर दुबे का लेख **"क्यों न चलें साईकिल की ओर"**, श्री अजय त्यागी की रचना **"जिन्दगी"** एवं सुश्री हिना सलीम की रचना **"बिटिया"** सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हक) राजस्थान

आपके कार्यालय द्वारा पत्र सं. हिंदी/गृह पत्रिका–प्रयास/8–215–16/155, दि. 09.10.2015 के तहत हिंदी गृह पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाहित संपूर्ण रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगी। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। **"विवाह एक अटूट बंधन"** श्री मुकेश कुमार, **"बेबस किसान, लाचार कृषि"** सुश्री रेखा, **"सफलता के सात सूत्र"** श्रीमती संजु रानी, **"बिटिया"** श्रीमती हिना सलीम का आलेख सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर एवं पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के सफल सम्पादन रचनाओं के चयन, संकलन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक तथा सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रधान महालेखाकार का कार्यालय (सा.व.सा.क्षे.ले.प.) कर्नाटक

संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "प्रयास" वर्ष 2015 की प्राप्ति हुई। अतः आभार स्वीकार करें।

पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं रोचक, मौलिक, ज्ञानवर्धक एवं पठनीय हैं। "नारी मन" (श्रीमती हेमलता गुप्ता), **"जिंदगी"** (श्री अजय त्यागी) तथा **"बिटिया"** (श्रीमती हिना सलीम) रचनाएं विशेष रुप से प्रभावित करती हैं। पत्रिका की साज–सज्जा भी उत्तम है।

"प्रयास" पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिये 'सुगंधा' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भारतीय लेखा तथा परीक्षा विभाग
कार्यालय महालेखाकार (लेखा परीक्षा) पंजाब
प्लाट नं. 21, चण्डीगढ़–160017

आप की पत्रिका "प्रयास" के अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका में निहित, सभी रचनाएँ सुपाठ्य और ज्ञानवर्धक हैं। सारी रचनायें सराहनीय और प्रेरणात्मक हैं।

'विवाह एक अटूट बन्धन', **'सफलता के सात सूत्र', 'आओ करे पानी संरंक्षण'** आदि लेख अच्छे लगे। **'नारी मन', 'शिव–शक्ति'**, अच्छी हैं।

पत्रिका की उज्ज्वल भविष्य की आशा करते हैं।

महालेखाकार (ले एवं ह) का कार्यालय,
आंध्र प्रदेश तथा तेलंगाना, हैदराबाद – 500004

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका "प्रयास" के पंचम अंक की प्रतियां प्राप्त हुई, तदर्थ आभार।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सुरूचिपूर्ण ही नहीं ज्ञानवर्धक एवं उपयोगी भी हैं। विशेषकर संतोष कुमार गुप्ता की कहानी **"बरगद का पेड़"**, एम.एस. गर्ब्याल का लेख **"भारत के वित्तीय प्रहरी"** में ऑडिट पार्टी के सदस्यों की तुलना भारतीय सेना से की गई है, हेमलता गुप्ता की कविता **"नारी मन"** एवं अजय कुमार मिश्रा का लेख **"आओ करे पानी संरक्षण"** में जल संरक्षण का महत्व प्रतिपादित हुआ है। छायाचित्रों एवं उत्तम मुद्रण ने भी इस अंक को विशिष्ट बनाया है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, रचनाओं के उचित चयन एवं सम्पूर्ण सम्पादन परिवार को बधाई।

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखापरीक्षा) राजस्थान
जनपथ, जयपुर– 302 005

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	लेखक	पृष्ठ संख्या
1	अहम 'ब्रांड' अस्मि!	संतोष कुमार गुप्ता	1
2	अथ एस.ए.एस. महाकथा	विजय बड़थ्वाल	4
3	मनुष्य और तकनीक	अशोक कुमार	7
4	आजादी के मायने	रेखा	11
5	शेर या लोमड़ी	खुशीराम नौटियाल	13
6	विकास हमारा नारा है	राकेश रंजन मिश्रा	14
7	अखण्ड भारत	योगेश त्यागी	15
8	उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण	मधुकर मिश्रा	16
9	कहीं छूट न जाय यह डेढ़ा–दुना	प्रभाकर दुबे	17
10	आज और कल की कहानी	सुनील कुमार	20
11	खबर	अश्विनी पाण्डेय	21
12	आज का दौर	अरविन्द कुमार उपाध्याय	23
13	सलाम अब्दुल कलाम	अगम सिंह	24
14	मेरा प्रदेश : राजस्थान	सुखीराम मीना	26
15	सफलता	राकेश रंजन मिश्रा	27
16	एक मुलाकात	अश्विनी पाण्डेय	28
17	समय को टालें नहीं	संजू रानी	29
18	पर्यावरण प्रदूषण	आनन्द कुमार पाण्डेय	31
19	कैसा लोकतंत्र?	हरि ओम	32
20	सफलता का मंत्र – आत्मविश्वास	योगेश त्यागी	35
21	पाती बीते दिनों की बाती	प्रभाकर दुबे	36
22	ऑनर किलिंग	रेखा	37
23	मेरा प्यार मेरी जिंदगी	सूर्य पाल	39
24	ढूँढ लाऊँगा	हरीश कुमार	40
25	खेलों में भारत का गिरता स्तर	अजय त्यागी	41
26	उत्तराखण्ड के जंगलों में आग : एक आपदा	लक्ष्मण सिंह	44
27	अधरंगे विचार	हेमलता	46
28	है आस, होंगे सफल	हरीश कुमार	47
29	हौसला बनाम परिस्थिति	योगेश त्यागी	48
30	संघर्ष	अलका रानी	49
31	माँ की इच्छा	रेनू	50
32	भाग्यवादी नजरिया	अलका रानी	52
33	बहाने बनाम सफलता	अलका रानी	53
	राजभाषा प्रतियोगिता 2015 – निबंध (प्रथम पुरस्कार)		
34	भारतीय शिक्षा के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ	गोविन्द सिंह	55
	सतर्कता जागरूकता प्रतियोगिता 2015 – निबंध (प्रथम पुरस्कार)		
35	सतर्कता जागरूकता	गोविन्द सिंह	57

अहम 'ब्रांड' अस्मि! (व्यंग्य)

संतोष कु0 गुप्ता,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

डार्विन के सिद्धान्त के अनुसार मनुष्य ने अपने विकास के क्रम में एक कोशिकीय अमीबा से आगे कॉकरोच, मछली, साँप इत्यादि से लेकर चिम्पांजी, बंदर तक का सफर करोड़ों सालों में तय किया। परंतु वास्तविकता में मानव अपने चरम विकास को मात्र पिछले सौ सालों में ही प्राप्त हुआ है। इस क्रमिक विकास का उच्चतम सोपान ब्रांडेड–मानव है। ब्रांड ही वह कारक है जो पूरे काल–क्रम को दो भागों मे बांटता है– पूर्व ब्रांड युग एवं ब्रांड युग।

पूर्व ब्रांड युग का मानव अविकसित और पिछड़ा माना जाता था। उसके कपड़े–जूते इत्यादि पर एक खास किस्म का प्रतीक चिह्न (logo) नहीं हुआ करता था। कालांतर में, यही चिह्न ब्रांड का प्रतीक बना। आधुनिक मीडिया की मानें तो यही लगता है कि किसी बड़े ब्रांड को हासिल करने के लिए, या यूं कहें कि 'ब्राण्डत्व' की प्राप्ति के लिए ही यह नश्वर जीवन हम सब ने धरण किया हुआ है। मनुष्य पैदा तो होता एक जैसा ही है, मगर ब्रांड ही उसमें अंतर पैदा करता है। ब्रांड का दायरा बहुत व्यापक है, यह वस्तुओं से आगे निकल कर जाति, धर्म, पंथ, विचारधारा तक जाता है।

हम अपनी स्मृतियों को खंगालें तो ज्यादातर लोगों के घर थान–का–कपड़ा आया करता था। उसी कपड़े से तीन–चार बच्चों की एक जैसी कमीज बनती थी, और एक जैसे नाड़े वाले पाजामे। 80 के दशक में मिथुन चक्रवर्ती ने एक बड़े जाने पहचाने ब्रांड को लोकप्रिय बनाया। वह था–'डिस्को'। लोग बोलते थे– डिस्को कपड़े, डिस्को गाने, ...मिथुन दा के सभी दीवाने। मतलब यह है कि ब्रांड को कामयाब बनाने के पीछे किसी लोकप्रिय शख्सियत का होना बहुत आवश्यक है। इस बात को आधुनिक बाजार ने बहुत ही बेहतरीन तरीके से समझा है। जहाँ आप लोकप्रिय हुए, बाजार आप में पंखा, कोल्ड ड्रिंक, साबुन, तेल, पाउडर, नमक, मसाला, अचार, पापड़, मच्छर मार टिक्की से लेकर टॉयलेट क्लीनर तक बेच सकने की अपार संभावनाएं तलाश कर लेता है। आज हम जिसे भी अपना आदर्श या हीरो मानते हैं, वह किसी न किसी ब्रांड का पैरोकार है। बात चाहे महानायक अमिताभ बच्चन की हो या भारत रत्न महान सचिन तेंदुलकर की, सभी इस ब्रांड रूपी परम सत्ता के वाहक बने नजर आते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी के शब्दों को उधार ले कर कहूँ तो –'ब्रांड' मय सब जग जाना। रहीमदास जी से भी शब्दों की उधारी ले कर कहा जा सकता है की– रहिमन 'ब्रांड' राखिए, बिनु ब्रांड सब सून।

बचपन में देखा था कि शादियों में दहेज का मानक कुछ ब्रांडेड आइटम तय करते थे। मसलन एचएमटी घड़ी, हीरो साइकिल, मर्फी/फिलिप्स/बुश/संतोष रेडियो। यजदी, राजदूत और बुलेट मोटरसाइकिल बड़े लोगों का ब्रांड था। लुना और प्रिया स्कूटर काफी समय तक मध्यम वर्ग का पसंदीदा दोपहिया ब्रांड बना रहा। चारपहिया वाहनों की श्रेणी में अंबेसडर कार काफी समय तक सत्ता, रुतबा और रौब–दाब का ब्रांड बना रहा। सत्ता के हनक के रूप में अंबेसडर कार की ब्रांड वैल्यू इतनी जबर्दस्त रही कि तमाम लग्जरी कारों के होते हुए भी, इस कार को सत्ता–प्रमुखों ने अपने प्रिय वाहन के खिताब से नवाजे रखा। अंबेसडर कार के ऊपर नीली–लाल बत्ती सत्ता का इतना जबर्दस्त ब्रांड बना, कि उसकी चाहत में ढेरों नौजवानों ने अपने जवानी को कुर्बान कर दिया।

ब्रांड को बनाने में निर्बाध गति से सूचना का प्रसारण होते रहना आवश्यक है। प्राचीन काल में नारद मुनि सूचना प्रसारण के अगुआ ब्रांड थे। उनको हर कहीं बेरोक–टोक आवाजाही थी। उसी से प्रेरित होकर वर्तमान मीडिया को भी हर जगह बेरोक–टोक पहुँच प्रदान की गई है। ब्राण्डत्व की प्राप्ति हेतु प्रतिदिन कम से कम 4–5 घंटे टीवी देखना अनिवार्य है। टीवी देखने के साथ–साथ यदि आपके पास दो–चार क्रेडिट–कार्ड हों, और स्मार्ट फोन में अमेजन/फ्लिपकार्ट का एप्प है, तो आप त्वरित गति से 'ब्राण्डत्व' को प्राप्त हो सकते हैं।

ब्रांड की सफलता में गृहणियों और बच्चों का बहुत बड़ा योगदान होता है। यदि पड़ोसी के बरामदे में स्कॉच ब्राइट का पोंछा सूख रहा है, तो फिर आप के यहाँ भी कम से कम वही ब्रांड होना चाइए। ब्रांड की प्रतिस्पर्धा बहुत तगड़ी होती है। यह साड़ी, जूलरी इत्यादि पर परिचर्चा के बाद अप्रत्याशित रूप से बढ़ जाती है। पुरुष भी अब ब्रांड के मामले में पीछे नहीं रहा– शर्ट, जींस, जूते, बरमूडा, डीओ, बेल्ट, चश्मा इत्यादि सब कुछ बड़े ब्रांड का होना चाहिए। अरमानी और वर्साचे अब कोई अंजाने ब्रांड नहीं रहे। किसी भी पार्टी में इनको धारण कर शरीक होइए, और फिर देखिये कमाल! लोगों की नजरें खुद–ब–खुद आपके तरफ मुड़ जाएंगी– कुछ जलन से, तो कुछ प्रशंसा के भाव के साथ।

ब्रांड आपके स्टेटस का प्रतीक हो चला है। ब्रांड आपको धारण करता है। आप ब्रांड पर टिके हुए हैं। जिसके पास अच्छी ब्रांड की कार हो उसको शादी या अन्य पार्टियों का निमंत्रण दे कर साग्रह बुलाया जाता है। मेरे एक परिचित के पास बी.एम.डबल्यू. कार थी। उसके महंगे मेंटीनेंस खर्चे से तंग आ कर उन्होंने उसे बेंच दिया, और दूसरी कार खरीद ली। उन्होंने अपनी पीड़ा मुझे बताया कि लोग नई कार से उतरते ही पहले यही सवाल पूछते हैं कि आपकी बी. एम.डबल्यू. कार कहाँ गई? भाई, अब तो यही लगने लगा है कि निमंत्रण अब तक मुझे नहीं उस बी.एम.डबल्यू. कार को ही मिल रहे थे। मैं तो बेकार में ही ज्यादा सम्मान पाकर फूलने लगा था। वास्तव में आज के समय में यही सत्य है– यः धार्यति, सः ब्रांडः।

अभी हाल में एक सर्वे हुआ कि लोगों के पास ज्यादा पैसा आने पर क्या करते हैं? तो नतीजे बड़े चौकाने वाले आए। ज्यादातर लोगों का खाने पर व्यय तो पहले जैसा ही रहा, मगर

उन्होंने सबसे पहले अपनी वर्तमान कार को बदलकर बड़े ब्रांड का कार खरीदी। शायद टाटा कंपनी की लखटकीया नैनो कार के असफल होने के पीछे यही राज था कि उस कार की ब्रांडिंग को आम आदमी के साथ जोड़ दिया गया था।

जिसने ब्रांड के महत्व को समझा वह 'विकसित' कहा जाने लगा। ब्रांड की समझ में गुणात्मक बढ़ोत्तरी 24X7 चलने वाली टीवी चौनलों के आ जाने से बहुत ज्यादा हुई। हर चैनल दिन रात यही बतलाता रहता है की आपको किस ब्रांड की बानियान, जूते, मसाले, तेल, रंग–रोगन, चायपत्ती, दोपहिया या चारपहिया इस्तेमाल करना चाहिए। हर ब्रांड यही कहता है की मेरी शरण में आ जाओ, मुझे अपना लो। मेरे बिना तुम्हारा कोई अस्तित्व नहीं है। तुम्हारे हर सुख का कारण सिर्फ और सिर्फ मैं ही हूँ। आँखें मूँद कर अपना सर्वस्व (डेबिट/क्रेडिट कार्ड) मेरे ऊपर न्यौछावर कर दो। तुम्हारा जीवन नश्वर है। इस नश्वर जीवन की सार्थकता अमुक ब्रांड को इस्तेमाल करने में ही है। टीवी और इंटरनेट पर लगातार आने वाले विज्ञापनों की बाढ़ ने मेरे मन–मस्तिष्क पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया है। आजकल मेरे दिमाग में एक ही वाक्य गूंजता रहता है– 'अहम 'ब्रांड' अस्मि !

और इस प्रकार मैं पूर्ण 'ब्राण्डत्व' को प्राप्त हो चुका हूँ। आगे अब आप सब की बारी है....।

हिंदी चिरकाल से ऐसी भाषा रही है जिसने मात्र विदेशी होने के कारण किसी शब्द का बहिष्कार नहीं किया।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

चिड़ियों की तरह हवा में उड़ना और मछलियों की तरह पानी में तैरना सीखने के बाद अब हमें इन्सानों की तरह पृथ्वी पर चलना सीखना है।

– डॉ. राधाकृष्णन्

अथ एस.ए.एस. महाकथा

विजय बड़थ्वाल,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

इस महान परीक्षा यात्रा का आरंभ सन् 1994 में हुआ, जब मैं अपनी सेवा के तीन बरस पूर्ण करने के बाद किसी बहुत ही बुरे मुहूरत में परीक्षा देने इस महा–समर में उतरा। मन लगाकर पढ़ा तो था ही, सो परीक्षा में सारे थ्योरी पेपरों में अच्छे अंक मिले पर प्रैक्टिकल में मात खा गया। पर, मैं ठहरा पक्के इरादे वाला पहाड़ी आदमी, छाटे मोटे परिणामों से घबराने वाला थोड़े ही था। पुनः परीक्षा देने की ठान ली। तैयारी में कसर थोड़ी भी न छोड़ी। लगातार बारह साल तक परीक्षा देता ही रहा पर कभी थ्योरी में कम तो प्रैक्टिकल में ज्यादा की उठक–पटक चलती ही रही। अंक अनुपात कभी भी पास कराने वाला न बन सका। कई बार सिलेबस बदल जाता था तो मैं पिछले वाले की तगड़ी तैयारी करके परीक्षा हाल में पहुँच जाता था। एक बार पंडित जी से भी भाग्य दिखाया, पर सारा तन्तर धरा रह गया। कभी बैलेंसशीट धोखा दे जाती तो कभी प्रॉफिट एण्ड लॉस अकाउन्ट रोड़े अटका देता, पर मेरा इरादा फिर भी डिगा नहीं।

आखिरकार मैंने कुछ दिन इस चक्कर से दूर रहने की ठान ली और उत्तराखण्ड चला आया और दो चार साल परीक्षा के इस जंजाल से दूर ही रहा। कुछ साल बाद पता चला कि परीक्षा की पद्धति बदल गई है और अब सब कंप्यूटरीकृत हो गया है, बस जाना है और बटन दबाकर टिक लगा देना है। न बैलेंस शीट बनाने का चक्कर न पे शीट बनाकर इनकम टैक्स निकालने का झंझट। ये सुनकर तो मेरी बॉछें खिल गई पर दूध का जला तो छॉच भी फूँक–फूँक कर पीता है, सो रिस्क लेना उचित नहीं लगा और मैं ठण्ड रखे बैठा रहा पर एक दिन प्रभात सिंह नेगी जी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (परीक्षा) का फोन आया, वो बोले कि आज आखिरी तारीख है आप अपना परीक्षा का फार्म तुरन्त भर दो। मैंने बहुत मना किया पर वो तो अड़े रहे कि आप एक बार इस नई परीक्षा प्रणाली को देकर अवश्य देख लो, सो उनकी बात रखने के लिए और कंप्यूटरीकृत पद्धति को देखने की अभिलाषा में मैंने अपना नाम परीक्षा के लिए लिखवा ही दिया।

आखिर परीक्षा का दिन आ ही गया, सोचा कुछ तो पुराना पढ़ा लिखा ही काम आ जाएगा और कुछ परमेश्वर संभाल लेगा। पहली बार में परीक्षा की तैयारी के लिए रात को टेबल लैंप लगाकर पढ़ने लगा तो बीवी बोली क्यों आँखें फोड़ रहे हो, बुढ़ापे में चश्मा भी काम करना

बन्द कर देगा। मैंने सोचा कुछ तो इसे मन्तर देना ही होगा, नहीं तो पढ़ने भी न देगी। सो मैं बोला कि कुछ दिन दफ्तर में नए भर्ती हुए लोगों को पढ़ाने का महत्वपूर्ण कार्य मुझे दिया गया है, उनके भविष्य का सवाल है सो मुझे चैन से तैयारी कर लेने दे, भाग्यवान। सो वो तो टली, अब मेहनत करने की मेरी बारी थी। रात–रात जाग कर मैंने सारे भगवानों को याद किया और अपने को पास करने के लिए प्रसाद, धूप, दीप चढ़ाने का वादा किया। भगवान भी मेरे चकमे में आने वाला थोड़े ही था, सो पहली बार में केवल 6 पेपरों में ही पास किया। पर मेरे लिए तो ये भी ओलम्पिक में स्वर्ण पदक पाने के समान ही था। अगली बार तो मैं बड़े ही जोश से परीक्षा में उतरा, अब तो केवल तीन पेपर ही बचे थे। परमेश्वर ने फिर भी मेरे ऊपर पूरा भरोसा नहीं किया और सोचा कि पता नहीं कुछ दान–धरम करेगा भी या नहीं, सो केवल दो पेपरों में ही पास किया। पर मैं तो इसके लिए भी परमात्मा को धन्यवाद देता हूँ कि उसने इस लायक समझा और एक बार फिर परीक्षा की तैयारी करने का अवसर प्रदान किया। अबकी बार ईश्वर ने मेरी पूरी परीक्षा लेने का मन बना लिया था और अब 50 प्रतिशत अंक निगेटिव मार्किंग के साथ लाने का नया फार्मूला लागू करके मेरी अग्निपरीक्षा को और भी टफ कर दिया था। फिर से मैंने अपनी कमर कस ली और घर में कहा कि मेरी बदली पढ़ाने वाले सैक्शन में हो गई है, सो पढ़ाने के लिए पढ़ना तो पड़ेगा ही पर बाकी सब घूमने टहलने वाले दौरे–वौरे से तो ठीक ही है, सो मुझे पढ़ने दो। बच्चे भी मेरी मदद करने लगे और शांति बनाकर मेरे इस महान कार्य में मेरी मदद करने लगे। पत्नी बोली कि कहीं पहले की तरह परीक्षा देने का भूत तो नहीं लग गया है। मैंने कहा कि क्या बात करती हो मेरी तो परीक्षा देने की उम्र ही निकल गई है, अब मैं थोड़े ही डिपार्ट–मैन्टल परीक्षा दे सकता हूँ। ये सोचकर उसे थोड़ी तसल्ली मिली, नहीं तो वो सोच रही थी कि किसी परीक्षा–वरीक्षा के चक्कर में पड़कर मेरे को अटैक न पड़ जाए। लेकिन अबकी बार पहले की तरह धूल में लठ लगने वाला नहीं था। मेरे जैसे तुक्केबाजों को छाँटने के लिए ही 50 प्रतिशत अंक निगेटिव मर्किंग के साथ रखे गए थे। लेकिन मुझे तो अपने सद्कर्मों पर पूरा विश्वास था कि ये एक दिन मेरी मदद जरुर करेंगे। साथ ही मैं सारे देवी–देवताओं को नियमित रुप से सुबह उठते ही नमन करने लगा और कई मन्दिरों में आकर माथा टेकने लगा तथा दान, पुण्य करने की कसमें खाकर मैंने तो अपनी तरफ से काम कर दिया था, अब बस ईश्वर के अपने हाथ दिखाने की बारी थी।

परीक्षा के लिए मैंने सोचा कि पढ़ा तो जीवन भर है ही और बुजुर्गों ने कहा भी है कि पढ़ा–लिखा कभी बेकार नहीं जाता, सो नई पुस्तकें पढ़ने में क्या रखा है। पहले के बीस साला तर्जुबे को ही आधार मानकर माउस दबा दूँगा। बाकी ईश्वर देख लेगा। आखिर कितने साल मेरी परीक्षा लेता रहेगा, कभी तो थक कर मेरी लगन और जीवट को देख उसे दया आ ही जाएगी। बाकी जो होता है, अच्छा ही होता है। यह सोचकर मैंने अपने बुढ़ापे के दिमाग को सकारात्मक सोच में रंगकर परीक्षा में माउस दबाने की सोची। सोचा तो था कि क्या जाता

है, आखिर अनुभव भी कुछ होता है, और बड़े बुजुर्गों ने कह ही रक्खा है कि साहस भी भाग्य चमका सकता है। सो परमात्मा का नाम लेकर मैनें भी माउस चटका ही दिया। सोचा कौन सा मेरे को कॉपियाँ भरकर दिखानी हैं, केवल माउस पर भाग्य का चक्र ही तो परखना है। आखिर मैं गया और माउस की गर्दन दबाकर अपने भाग्य को क्लिक करके आ ही गया और भूल गया कि परीक्षा भी दी थी।

एक दिन एक फोन आया कि भाईजी आप पास हो गए हो। मैंने सोचा कि कोई मेरी फिरकी लेकर पागल बना रहा है। सो फोन काट दिया और लंच के लिए चल पड़ा किन्तु तुरन्त ही दूसरा फोन आया कि बधाई हो आप पास हो गए हो। इसके बाद तो सारा दफ्तर मुझे बधाई देने लगा। अब तो लगा कि शायद सच ही हो पर यकीन नहीं हो रहा था, क्योंकि मुझे तो फेल होने का ही अनुभव था सो तुरंत आधा खाना प्लेट में ही छोड़ दफ्तर की तरफ लपका। देखा कि सभी मेरा इंतजार कर रहे हैं। बधाइयों का तॉता लग गया जी, पता चला कि इस बार केवल दो ही पास हुए हैं। मिठाई में खर्चा बॉटने वाला भी कोई नजर नहीं आया पर आखिर बॉटनी तो थी ही, युगों के बाद यह दिन देखने को मिला था नहीं तो दूसरों की ही खाता रहा था आज तक। सो थोड़े को पूरा समझना और घबराना नहीं। इस कथा का सार समझना और लगे रहना मन्त्र जपते "ॐ एस ए एस महाकथा स्वाहा"।। इति

प्रतिभा का अर्थ है बुद्धि में नई कोपलें फूटते रहना। नई कल्पना, नया उत्साह, नई खोज और नई स्फूर्ति प्रतिभा के लक्षण हैं।

– आचार्य विनोबा भावे

जो व्यक्ति तुम्हारे सामने औरों की निन्दा करता है, वह अन्यों के सामने तुम्हारी भी निन्दा करने से नहीं चूकेगा।

– शेखसादी

मनुष्य और तकनीक

अशोक कुमार,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जब आदिम मनुष्य ने वृक्षों से उतर कर धरती पर पैर रखा और चार के बजाए दो पैरों पर चलना आरंभ किया था, तभी से मनुष्य विभिन्न आविष्कारों एवं खोजों के द्वारा निरन्तर अपनी तकनीक को विकसित करता आ रहा है। चाहे आग की खोज हो, पहिए का आविष्कार हो, पत्थर के औजारों का प्रयोग हो या आधुनिक समय के वाहन, मशीनें, कम्प्यूटर आदि की खोज व आविष्कार हो, तकनीक ने मानव जीवन को सुखमय और समृद्ध बनाया है।

आज हम तकनीक के युग में रह रहे हैं। 21वीं सदी में मनुष्य आज तकनीकी रूप से इतनी प्रगति कर गया है कि इसे तकनीक का युग कहा जा सकता है। तकनीकी प्रगति आज चरघातांकी दर से चल रही है। पहले बहुत से आविष्कारों को संदेह की दृष्टि से देखा गया था। उदाहरण के लिए– चाहे सिलाई मशीन के प्रयोग से दर्जियों का रोजगार छिनने का भय हो या अपने देश में कम्प्यूटर के आगमन से बेरोज़गारी बढ़ने की आशंका रही हो, ये सब धारणाएं निर्मूल सिद्ध हुई हैं। वास्तव में सिलाई मशीन के कारण बहुत से लोगों को रोजगार मिला, क्योंकि इससे अधिक कपड़ा सिया जा सकता था जिसके लिए अधिक कपड़ा बुना जाना, अधिक कपास उगाया जाना आवश्यक था। इससे वास्तव में विभिन्न नए रोजगारों का सृजन हुआ। कम्प्यूटर के आगमन से अनेक नए रोजगार देने वाले कार्यक्षेत्रों का शुभारम्भ हुआ। आज कम्प्यूटर एवं सूचना प्रौद्योगिकी के कारण भारत का सम्मान संपूर्ण विश्व में बढ़ा है और देश बहुमूल्य विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के साथ–साथ लाखों युवाओं को रोज़गार देने में सफल हो सका है।

अभी तक तकनीकी प्रगति रोज़गार सृजन में सफल रही है पर क्या भविष्य में भी ऐसा होता रहेगा? यह एक जटिल प्रश्न है। अब तकनीक इतनी अधिक उन्नति कर गयी है कि ऑटोमेशन और रोबोटिक्स का युग आरंभ हो गया है। ऑटोमोबाइल उद्योग जैसे बहुत से निर्माण उद्योगों में ऑटोमेशन और रोबोटिक्स का प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। रोबोट्स कारों के पुर्जे तैयार करने, वैल्डिंग करने, उन्हें पेंट करने से लेकर पैकिंग तक का सभी कार्य बिना किसी मानव हस्तक्षेप के सम्पादित कर रहे हैं। सभी कुछ कम्प्यूटर प्रोग्रामों द्वारा नियन्त्रित है। फैक्टरियों में एसेंबली लाइन में लगे रोबोट अपने प्रोग्राम के अनुसार अपने हिस्से का कार्य पूर्ण कर देते हैं।

रोबोट्स मानव को प्रतिस्थापित करने की स्थिति में आ चुके हैं। ऐसे अनेक कार्य जो मानव के लिए कठिन हैं उन्हें रोबोट बिना थकान, भूख–प्यास की चिन्ता किए कम समय में और अधिक दक्षता के साथ पूर्ण कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में किसी भी फैक्टरी के मालिक के लिए मनुष्य के स्थान पर रोबोटों से कार्य करवाना सस्ता और तनावरहित हो जाता है। उसे बस एक बार ऐसा स्वचालित तंत्र और रोबोटों पर एक बार खर्चा करना है, फिर उनपर मैंटीनेंस को छोड़कर कोई अन्य व्यय नहीं है। न तो उन्हें वेतन देना है, न ही अवकाश। वे कभी भी हड़ताल नहीं करेंगे। ऐसी स्थिति में मानव की भूमिका केवल कारखानों एवं यंत्र–सयंत्रों को आरंभ एवं बंद करने तक सीमित हो जाती है। जो उद्योग पहले हजारों लोगों को रोज़गार उपलब्ध कराते थे अब मात्र कुछ सौ कर्मचारियों को ही रोज़गार उपलब्ध करा पा रहे हैं।

यही काफी न था कि अब 3डी प्रिन्टर का आविष्कार हो चुका है। जिस तरह पारंपरिक प्रिन्टर से हम किसी अभिलेख का प्रिन्ट लेते हैं उसी तरह 3डी प्रिन्टर से किसी भी वस्तु को त्रिआयामी रूप में प्रिन्ट बनाया जा सकता है। 3डी प्रिन्टर कम्प्यूटर में बनाए गये किसी वस्तु या पुर्जे का हू–ब–हू त्रिआयामी प्रतिरूप बना सकता है। इससे हमें किसी उपकरण आदि को बनाने के लिए किसी कारीगर के पास जाने की आवश्यकता नहीं है। बस हमें एक ऐसा प्रिन्टर चाहिए और अपने कम्प्यूटर की सहायता से हम मनचाही वस्तु को बना सकते हैं। चाहे साइकिल हो या पेंचकस या अन्य कोई जटिल उपकरण यह कुछ भी बना सकता है। भविष्य में इसमें और भी सुधार हो जाएंगे जिससे कि इससे जटिल से जटिल वस्तु का निर्माण बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप या सहायता के हो जायेगा। यह निश्चित तौर पर कारीगरों एवं मरम्मत के काम में लगे लोगों को बेरोजगार कर देगा। वास्तव में भविष्य में शायद ऐसा समाज हो जिसमें एक ओर तो पूर्णतः सम्पन्न लोग हों और दूसरी ओर पूर्णतः वंचित लोग। निश्चय ही ऐसा विभक्त समाज केवल वर्ग संघर्ष को ही जन्म दे सकता है। आज विश्व के विभिन्न हिस्सों में चल रहा विभिन्न प्रकार का संघर्ष इसके आरंभ की दस्तक दे चुका है।

आजकल कम्प्यूटर व मोबाइल फोन जैसे संचार के माध्यमों की सहायता से लोग घर बैठे अपना बिजली का बिल, टेलीफोन बिल आदि चुका रहे हैं और ऑनलाइन खरीददारी करने में भी इनकी सहायता ली जा रही है। एक ओर इससे लोगों का घंटों लाइन में लगने वाला समय बच रहा है साथ ही घर से इन कार्यों में आने–जाने का खर्च भी बच रहा है। परन्तु संचार तकनीक के अनेक दुष्परिणाम भी हैं। बच्चे और बड़े सभी आजकल मोबाइल फोन और कम्प्यूटर से चिपके रहते हैं। लोगों के पास दूसरे से मिलने–जुलने का समय कम हो गया है। वे वास्तविक दुनिया के स्थान पर इंटरनेट की आभासी दुनिया में खोये रहते हैं। इससे एक ओर सामाजिक व्यवहार समाप्त हो रहा है साथ ही सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट पर युवाओं एवं अपरिपक्व लोगों को कट्टर विचारों से लैस कर उनका आतंकवाद और अनेक अपराधों में प्रयोग

किया जा रहा है। आनलाइन खरीदारी का चलन बढ़ने से पारंपरिक दुकानदारों व उनके साथ काम करने वालों का रोज़गार छिनने का भी भय उत्पन्न हो गया है।

तकनीक जिस प्रकार से प्रगति कर रही है वह दिन दूर नहीं है जब मनुष्य का कार्य केवल अपनी इच्छा व्यक्त करने तक सीमित रह जायेगा। उसका हर कार्य मशीनें और रोबोट कर देंगे। नैनोटेक्नालॉजी के साथ हम एक नए युग में प्रवेश करेंगे, जहाँ सूक्ष्म नैनोबॉट्स हर वो कार्य सिद्ध कर देंगे जो कि मानव के लिए संभव नहीं है। नैनोटेक्नालॉजी के प्रयोग से बने उन्नत पदार्थ एवं उपकरण हमारे दिन–प्रतिदिन के कामों में प्रयुक्त होने लगेंगे। बीमार होने पर हमारे घरों में लगे उपकरण स्वंय हमारी जाँचकर उसका इलाज भी बता देंगे। सूक्ष्म नैनोबॉट्स शरीर के किसी हिस्से में आई ख़ामी को पकड़कर हमारे शरीर में प्रवेश कर उसे दूर कर देंगे। यह भी संभव है कि हम साइबोर्ग अर्थात मशीनी मानव बन जायें जिनके शरीर के अंगों को कृत्रिम रूप से प्रयोगशाला में बना लिया जाए अथवा घर पर ही 3डी प्रिन्टर से उसका निर्माण कर लिया जायेगा और रोबोटों द्वारा उसे शरीर में फिट कर दिया जायेगा। संतानें भी प्रयोगशाला में कृत्रिम रूप से बिना माता के जन्म दिये उत्पन्न हो जायेंगी। जेनेटिक इजींनियरिग की सहायता से मनचाहे गुणों वाले संतानों को जन्म दिया जा सकेगा। बच्चों को शिक्षा के लिए विद्यालय जाने की आवश्यकता भी नहीं रह जायेगी। उनके मस्तिष्क में एक कम्प्यूटर चिप लगा दी जायेगी जिसमें कि किताबी ज्ञान पहले से भरा होगा। यहाँ तक कि अगर किसी को किसी जगह की सैर करनी हो या किसी वाहन आदि को चलाने का आनंद लेना हो या उसे किसी स्वादिष्ट वस्तु का लुत्फ़ उठाना हो, उसके लिए उसे अपने आभासी चश्मे को पहनना होगा और उसे यह आभास होगा कि वह उक्त कार्य वास्तव में अनुभव कर रहा है। वह व्यक्ति बिना घर से निकले ही किसी भी जगह जाने का आनंद ले सकेगा या वाहन चला सकेगा। यहां तक कि वह अपनी खुद की एक आभासी दुनिया रच सकेगा जहां के नियम वो खुद तय करेगा। उस आभासी दुनिया में वह खुद का परिवार, दोस्त यहां तक कि पूरा एक शहर और संसार भी रच सकेगा। ऐसे संसार में वास्तविकता और आभास में अंतर बताना असंभव हो जायेगा।

बहुत तेजी के साथ आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से लैस मशीनें एवं उपकरण अस्तित्व में आते जा रहे हैं। भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस या कृत्रिम बौद्धिकता की उन्नति के साथ मशीनों के निर्माण एवं रखरखाव हेतु मानव की आवश्यकता ही नहीं रह जायेगी। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस से सम्पन्न मशीनें स्वयं का प्रतिरूप तैयार कर सकेगी और खुद की मरम्मत करने के साथ–साथ अपने को उन्नत बनाती चली जायेंगी। क्या यह संभव है कि एक स्थिति में कृत्रिम बुद्धि से सम्पन्न रोबोट्स मानव के विरूद्ध विद्रोह कर दें और मानव जाति को ही समाप्त कर दें? वास्तव में ऐसा होना असंभव भी नहीं है। जिस प्रकार होमोसेपिअंस आधुनिक मानव ने अल्पविकसित निएंडरथल मानव का अन्त कर दिया था उसी प्रकार संभव है कि ये उन्नत मशीनें एवं रोबोट हमारी सभ्यता का भी अन्त कर दें।

इस दुनिया में अनंत संभावनाएं हैं। भविष्य में अत्यन्त प्रदूषण एवं संघर्ष के कारण हमारा ग्रह जीवन को धारण करने योग्य नहीं रह जायेगा। मानव के अलावा सभी जीवन के रूपों का अन्त हो चुका होगा। यह भी हो सकता है कि इस ग्रह के प्रभावशाली लोग किसी और ग्रह में रहने चले जायें और साधारण लोग किसी तरह के भूमिगत शरणस्थलों में जीवन–यापन करने के लिए अभिशप्त हों। ऐसी शरणस्थलियां वास्तव में कैद़खानों जैसी ही होंगी।

तकनीक की इतनी विनाशकारी संभावनाओं के बीच गांधी जी के विचार याद आते हैं। वे तकनीक के विरुद्ध नहीं थे परन्तु हर उस तकनीक और मशीनों के विरुद्ध थे जो मानव को प्रतिस्थापित कर दे। अब हम तेजी के साथ उस समयकाल में प्रवेश कर चुके हैं जहाँ कि तकनीक हमारा ही विनाश कर सकती है परन्तु अब मनुष्य पीछे भी नहीं लौट सकता है। उसे आगे ही बढ़ना पड़ेगा चाहे परिणाम कुछ भी हो। शायद यही नियति हो।

दुनिया भर में शायद ही ऐसी विकसित साहित्यिक भाषा हो जो सरलता में और अभिव्यक्ति की दक्षता में हिंदी की बराबरी कर सके।

– फादर कामिल बुल्के

उच्च शिक्षा वही मानी जाएगी जिसे पाकर मनुष्य में विनम्रता, परोपकारी वृत्ति, सेवाभावी स्वभाव एवं कार्य करने की तत्परता में वृद्धि होती हो।

– स्वामी विवेकानन्द

उपदेश की सफलता इस बात में नहीं कि सुनने वाले उसकी प्रशंसा करते चले जाएं। जिसे सुनने के बाद वे लोग चिन्तनशील, गम्भीर और परिवर्तन–निरत दिखाई पड़ें तो उसे सफल उपदेश समझना चाहिए।

– गिलबर्ट वरनेट

आजादी के मायने

सुश्री रेखा,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

स्वतंत्रता के लिए लड़ी गयी लगभग एक शताब्दी की लड़ाई सिर्फ एक शत्रु के लिए थी। वह शत्रु दूर देश से व्यापार करने के उद्देश्य से इस भारतभूमि में आए और धीरे–धीरे यहाँ राजनीतिक, सामाजिक–सांस्कृतिक रुप से भी स्थापित होते चले गए। प्रारम्भ में मुगलों और उनके बाद के वंशजों ने थोड़े–बहुत प्रयास किए उनको खदेड़ने के परन्तु वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाए, क्योंकि उस समय भारतवर्ष अनेक क्षेत्रीय शक्तियों में विभाजित था व यहाँ पर एकजुटता की घोर कमी थी। हालांकि मुगलों के समय शासन–प्रशासन मजबूत था परंतु बाद में इसकी जड़ें कमजोर पड़ती चली गयीं और अंग्रेज उन कमजोर जड़ों का सहारा लेते हुए भारतवर्ष में घुसते चले गए और फिर एक दिन उन्होंने इसे अपने आर्थिक पाश में बुरी तरह जकड़ लिया।

अँग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की आवाजें 19वीं शताब्दी से ही उठनी प्रारम्भ हो गयी थी परन्तु उस समय की परिस्थितियां ऐसी थीं कि यह विद्रोह पैदा होते ही कुचल दिए जाते थे। धीर–धीरे भारत के लोगों में सांस्कृतिक और वैचारिक आदान–प्रदान हुआ, जो अंग्रेजों की ही देन था। इस तरह 20वीं शताब्दी के मध्य तक आते–आते सम्पूर्ण देश में बस एक ही शत्रु था, और वह थे – अंग्रेज। पूर्व से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण बस भारतीयों का एक ही उद्देश्य बन गया था–इस आर्थिक दासता से मुक्ति, शोषण से मुक्ति। इस स्वतत्रंता की लड़ाई में पूरे देश में राष्ट्रवादी लहर व्याप्त थी। बुराईयां उस समय भी बहुत थी। पर फिर भी यहाँ की सामाजिक व्यवस्था में हर वर्ग ने आजादी की लड़ाई में अपना भरपूर सहयोग प्रदान किया। इस लम्बे स्वतत्रंता संघर्ष में बहुत कुछ खोकर हमने 15 अगस्त 1947 को आखिरकार स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

स्वतत्रंता तो प्राप्त हुई लेकिन हमारे इतने शत्रु पैदा हो गए जिनसे हम आज भी करीब 70 वर्ष से लड़ रहे हैं, जूझ रहे हैं। बेरोजगारी, भुखमरी, अशिक्षा, कुपोषण, भ्रष्टाचार, महिला असुरक्षा, आतंकवाद, नक्सलवाद, महंगाई, मानसिक दासता आदि हमारे आज इतने शत्रु हैं कि एक को खत्म करना चाहो तो दूसरा सिर उठाने लगता है, फिर तीसरा, फिर.....। राजनीतिक रूप से देश गर्त में चला गया है। जिस देश में शिक्षा को पेशे के रूप में अपनाना लाचारी हो और राजनीति और प्रशासन को अपनाना श्रेष्ठता उसका पतन होने से कौन रोक सकता है।

हमें अंग्रेजों से आजादी मिली परन्तु जिस मानसिक गुलामी को वो छोड़ गए हैं वह पीढ़ी–दर–पीढ़ी हमारी संस्कृति और सभ्यता को नष्ट करती जा रही है। हमारे पास हमारा नया बहुत कम है। हम सब कुछ अंग्रेजों का छोड़ा हुआ ही आगे बढ़ा रहे हैं। अंग्रेज तो चले गए पर वो अपने ही जैसे शोषक, हिंदुस्तानियों की शक्ल–सूरत में छोड़ गए हैं। अब प्रश्न ये है कि हम आजाद किससे हुए और हुए भी कहाँ हैं? प्रभुत्वशाली सामंत और जमींदार उस वक्त भी शान–औ–शौकत से रहते थे और आम–आदमी तंगहाल था। यही स्थिति वर्तमान में है। न गरीब कम हुए न गरीबी। धूर्तता, चापलूसी, चाटुकारिता, बेईमानी, कामचोरी, भ्रष्ट आचरण हम भारतीयों की संस्कृति बन गया है। मानसिक गुलामी की पराकाष्ठा है कि हम लोग अब न भारतीय रहे न अंग्रेज, बस बीच में फंसे हुए हैं। यहाँ पर या तो बहुत उच्च वर्ग खुशहाल है या बहुत निम्न वर्ग खुशहाल है, मध्यवर्ग इन दोनों के बीच पिस रहा है क्योंकि उसकी आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के बावजूद भी उसको दिखावा करना पड़ता है। हम भारतीयों में हीनता ग्रंथि इतनी गहरी पैठ बना चुकी है कि हम अवसादग्रस्त और कुठांग्रस्त हो गए हैं। पुरानी जंजीरों को तोड़ नहीं पा रहे हैं, रूढ़िवादिता से चिपके हुए हैं और नयापन भी चाहते हैं।

अपने ही लोगों, अपनी भाषा–संस्कृति, वेश–भूषा को लेकर हम हीन महसूस करते हैं और यहीं से शुरुआत हो जाती है एक कुठांग्रस्त और अल्प–आत्मविश्वास की। हमारी युवा–पीढ़ी नशे की लत में अपनी ऊर्जा का क्षय कर रही है। जब युवाओं को ही राष्ट्र की कमान संभालनी है तो ये कमजोर मानसिकता और कमजोर निश्चय युवक देश को कहाँ लेकर जाएंगे। भारत के पास विश्व की सबसे अच्छी कार्यशील जनसंख्या है, जिसका भारत अपने विकास के लिए उपयोग कर सकता है।

यहाँ यह कहने का उद्देश्य नहीं है कि अंग्रेजों का शासन अच्छा था या कि हमें स्वतंत्र नहीं होना चाहिए था। बल्कि प्रश्न यह है कि आजाद होने का अर्थ क्या है? आजाद होने का अर्थ है अपना चहुँमुखी विकास करने का प्रयास, अपनी कमियों को दूर करने का प्रयास, जो हमने किया तो जरुर पर सम्पूर्ण मनोयोग से नहीं किया।

जाति–प्रथा, भेद–भाव आदि सामाजिक बुराईयां आज भी व्याप्त हैं। हम चाहते तो सभी बुराईयों से एक–एक कर निपट सकते थे। हुआ इसके विपरीत। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से अब तक घोटाले, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, मिलावटखोरी का बोलबाला है। हालांकि 21वीं शताब्दी में हालात थोड़े सुधरे हैं। परन्तु तकनीक के इस युग में अब तकनीकी गुलामी में उलझ गए हैं। सोशल मीडिया नामक बुखार ने बहुतों को अपनी चपेट में ले रखा है। आधुनिक होना और अद्यतन रहना बहुत अच्छी बात है मगर हाथ–धोकर पीछे पड़ना गुलामी है।

इस प्रकार गुलामी तो गुलामी है बस उसके रूप, देशकाल एवं परिस्थिति अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। यह हमें देखना है अपने विवेक द्वारा कि हमारे लिए क्या अच्छा है और क्या नहीं। अभी भी संदेह है आने वाले समय में भारत के भविष्य को लेकर। या तो और पतन की ओर जाएगा या फिर हम गुलामी को समझ कर इसको अपने अंदर से मुक्त कर देंगे। देखते हैं क्या होता है.....।

शेर या लोमड़ी (प्रेरक कथा)

खुशीराम नौटियाल,
लेखापरीक्षक

एक व्यापारी तीर्थाटन करते हुए एक जंगल से गुजर रहा था। उसके मन में यह संशय था कि ईश्वर है या नहीं। वहाँ उसने एक अपाहिज लोमड़ी को पड़े देखा। लोमड़ी के पैर नहीं थे किन्तु वह स्वस्थ थी। यह देखकर उसे आश्चर्य हुआ, तभी उसने शेर को मुंह में एक खरगोश दबाए आते देखा, डरकर व्यक्ति पेड़ पर चढ़ गया। उसने देखा कि शेर लोमड़ी के पास भोजन डालकर चला गया, जिसे लोमड़ी खाने लगी। अब उसे आश्चर्य होने लगा। उसे लगने लगा कि वाकई ईश्वर होता है, उसी ने शेर के मन में दया पैदा कर दी। अब उसने तय कर लिया कि मैं बेकार ही दुनिया के झमेलों में पड़ा हूँ। भगवान ही मेरा भला करेंगे। काम–धाम छोड़कर व्यापारी वहीं बैठ गया। भूख–प्यास सताती रही, दिन–प्रतिदिन कमजोर होता रहा।

एक दिन मरणासन्न हो गया। उधर से एक सन्यासी गुजर रहा था। उसे उस पर दया आई, पूछा तुम्हारी यह हालत कैसे हुई? तो उसने पूरी कहानी कह दी और बोला मुझे विश्वास हो गया था कि ईश्वर है लेकिन अब तो लगता है कि ईश्वर कहीं नहीं है। इस पर संन्यासी बोले, ईश्वर ने तो तुम्हें शेर बनने का सन्देश दिया था, लेकिन तुम लोमड़ी बन गए, तो इसमें उसका क्या दोष।

'शिक्षा हमें कहीं से भी मिल सकती है, यह हम पर निर्भर है कि हम उसका क्या अर्थ ग्रहण करते हैं।'

कोई काम शुरू करने से पहले, स्वयं से तीन प्रश्न कीजिये – मैं ये क्यों कर रहा हूँ, इसके परिणाम क्या हो सकते हैं और क्या मैं सफल होऊंगा और जब गहराई से सोचने पर इन प्रश्नों के संतोषजनक उत्तर मिल जायें, तभी आगे बढें।

– चाणक्य

विकास हमारा नारा है

राकेश रंजन मिश्रा,
हिंदी अधिकारी

कौन हुआ आजाद यहाँ पर
यही क्यों चर्चा करते हैं?
जाति–धर्म के भेद यहाँ के
घरों में बसा करते हैं।
दीवारों के अन्दर देखो
धर्म का पर्दा दिखता है,
इन्सान बना नमूना देखो
अधजल गगरा दिखता है।
समाज और सुरक्षा छोड़ो
माहौल यहाँ का फेल हुआ
अँधियारे का जीवन देखो
नरक भी बेमेल हुआ।
देश प्रथम है, ऐसी शिक्षा
यहाँ पर किसने देखी है?
पत्थरबाजों के साये में
खुदगर्ज जमीरी दिखती है।
बँटवारे से हुआ मुक्त तब
जन्नत इसे बनाने को
धर्म खड़ा प्रधान यहाँ भी
बगल की चर्चा करता है।
भूल कर आजादी को
एक–दूजे को न ललकारो तुम
दहशत गर्द माहौल में
सुख से न रह पाओगे तुम।
सीमा के प्रहरी को देखो
इस माटी के ही लाल हैं वो,
रात–दिन में फर्क कहाँ
हम सब के रखवाले वो।
शांति और सुरक्षा,
यही हिन्द की धारा है
जिद छोड़ आगे बढ़ो,
विकास हमारा नारा है।

अखण्ड भारत

योगेश त्यागी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

'जनमत संग्रह'– लोकतान्त्रिक प्रणाली का एक उपयोगी औजार, परन्तु देश की एकता के लिए एक ज्वलनशील प्रक्रिया। इसका ताजा उदाहरण है ब्रिटेन जैसे प्रभावशाली एवं समृद्ध राष्ट्र का यूरोपीय संघ से अलग होने के पक्ष में बहुमत द्वारा मतदान करना। माना कि ऐसी प्रक्रिया के सकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत होते हैं परन्तु बहुत से ऐसे नकारात्मक प्रभाव हैं जिनसे बचा नहीं जा सकता।

अब देखा–देखी में, ब्रिटेन की ही तर्ज पर दिल्ली में भी कुछ नेताओं द्वारा जनमत संग्रह कराने की मांग उठाई गई। आधार यह था कि– दिल्ली को पूर्ण राज्य का हक दिलाना। लोकतंत्र में इच्छा जाहिर करना बुरी बात नहीं है, बशर्ते यह विघटनकारी न हो। यदि किसी मुद्दे को संविधान के दायरे में सुलझाया जा सके, तो ज्यादा सही है क्योंकि संवेदनशील मुद्दे पर लोगों की राय प्रायः भिन्न–भिन्न होती है। किसी भी समाज में समान विचारधारा एवं मानसिकता के लोग नहीं पाये जाते हैं और ऐसे ही अवसर का लाभ वहाँ संकीर्ण विचारधारा वाले नेतागण उठाते हैं। कभी–कभी सब कुछ जानते हुए भी वास्तविकता से आँखे बन्द करनी पड़ती हैं, इसका एक ज्वलन्त उदाहरण है– UNO द्वारा भारत को कश्मीर में जनमत संग्रह कराये जाने पर अमल करना कि आवाम किस पक्ष पर अपना भरोसा कायम रखती है। परन्तु उससे पहले **'शत्रु राष्ट्र'** को भी कुछ कदम उठाने थे, जो आज तक नहीं हुए।

भारत में यह न हो तो अच्छा है। यहाँ भिन्न–भिन्न धर्मों एवं जातियों के लोग रहते हैं। कुछ मुद्दे ऐसे भी हो सकते हैं जिनसे लोगों की भावनाएं भटक सकती है। इतनी सारी भिन्नताओं वाले देश में लोगों को बांधे रखना एक चुनौती है।

इसलिए हमें यह समझना होगा कि कोई भी ऐसा कदम जो कि इस महान राष्ट्र की एकता, अखण्डता एवं भाईचारे के लिए खतरा पैदा करे, उससे हम सचेत रहें, दूर रहें।

!जय हिन्द!

उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण (एल.पी.जी.)

मधुकर मिश्र,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वर्तमान युग वैश्विक प्रतिस्पर्धा का युग है। उदारीकरण (Liberalization) का शाब्दिक अर्थ है–'उदार हो जाना।' मतलब विदेशी कंपनियों को अपने देश में प्लांट स्थापित करने हेतु नियमों एवं विनियमों में ढील देना। निजीकरण (Privatization) का शाब्दिक अर्थ होता है– 'सार्वजनिक क्षेत्र से स्वामित्व का स्थानांतरण किसी एक संस्था/निकाय/व्यक्ति को कर देना।' (Globalization) का शाब्दिक अर्थ होता है–'किसी देश की अर्थव्यवस्था का शेष विश्व की अर्थ व्यवस्था से जोड़ना।'

भारत के परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त का कार्यान्वयन 1991 के दौर में चलाये गए आर्थिक सुधारों के दौरान हुआ। उस समय केंद्र में कांग्रेस की सरकार थी। तत्कालीन प्रधानमंत्री एवं वित्तमंत्री क्रमशः पी०वी० नरसिम्हाराव एवं डॉ० मनमोहन सिंह थे। दोनों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को दशा एवं दिशा प्रदान की, जिसके फलस्वरुप एक नया मॉडल विकसित हुआ, जिसे 'राव–मनमोहन' मॉडल के नाम से जाना जाता है।

वर्तमान समय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आर्थिक सुधारों का दौर ले आए। उन्होंने आई. टी. क्षेत्र के सहयोग से सब्सिडी (राजसहायता) को आंशिक रुप से गरीबों को वितरित ना करके, वास्तविक सब्सिडी के लाभ को आई.टी. के सहयोग से चिन्हित करके सीधे उपभोक्ता के खाते में डालने का काम सुनिश्चित किया है। हाल ही में केंद्रीय मंत्री डॉ रविशंकर प्रसाद (आई० टी० मंत्रालय) ने स्वीकार किया कि सब्सिडी का लाभ वास्तविक गरीबों के खाते में पहुँचाने के बावजूद अवशेष के रुप में सरकार के पास पर्याप्त सबसिडी की रकम पड़ी हुई है। मतलब साफ है कि अगर हम 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद देश की अर्थव्यवस्था पर नजर डाले तो पाएंगे कि 1991 के आर्थिक सुधार नीतियों में अगर हम पर्याप्त तकनीकी को जोड़ दें अर्थात् नीतियाँ जहाँ पर्याप्त मार्गदर्शन करती हैं, वहीं तकनीकी बारीकियों को उजागर करती है।

उपरोक्त से स्पष्ट है कि "हमारा देश बदल रहा है।"

कहीं छूट न जाय यह डेढ़ा–दुना

प्रभाकर दुबे,
लेखापरीक्षा अधिकारी

शीर्षक 'डेढ़ा–दुना' शायद पाठक गण के लिए नया तथा अपरिचित हो, पर इलाहाबाद से आने वाले सभी सहकर्मियों का इससे परिचय अवश्य हुआ होगा। देहरादून की ढेर सारी खूबियों के साथ इसके महंगा होने की चर्चा न होना असंभव है और यही कारण है कि हमारे एक मित्र जो अब सेवा निवृत्त हैं द्वारा इस शहर का नामकरण डेढ़ा–दुना किया गया था जो यहाँ की महंगाई के कारण सार्थक सा प्रतीत होता है। निरर्थक है तो बावजूद इसके इसको छोड़ने की कल्पना जो जीवन के खुशनुमा व आनन्ददायक रंग को भंग करता है। जीवन के नौ वर्ष यहाँ गुजारने तथा यहाँ की आबोहवा में साँस लेने के बाद इस धरती का ऋणी होना स्वाभाविक है और क्यों न हो? इस मिट्टी की बात ही कुछ ऐसी है और यही कारण है कि अन्य बड़े शहरों की तुलना में सीमित क्षेत्रफल होने के बावजूद भी यह अपने आप में खास है। इस खास की चर्चा का प्रयास ही 'प्रयास' के लिए छोटा सा प्रयास है।

दून घाटी के नाम से प्रसिद्ध यह स्थान अपने प्राकृतिक सुषमा, घने वृक्षों, बाग–बगीचों तथा पर्वत शिखरों के मध्य बसा होने के कारण अत्यंत मनमोहक दृश्यों को समेटे सदियों से जन मानस के आकर्षण का केंद्र रहा है। इस स्थान की यह विशेषता है कि यहाँ कुछ समय व्यतीत करने के बाद यहाँ का स्थायी निवासी होने की इच्छा बलवती हो जाती है। यही कारण है कि न केवल सामान्य जन वरन संत महात्माओं तक ने इसे अपना पसंदीदा स्थान बनाया एवं जीवन पर्यन्त यहाँ के निवासी बने रहे।

द्रोण नगरी के नाम से विख्यात इस स्थान का इतिहास वैसे तो बहुत सारगर्भित तथा अत्यंत प्राचीन है। पर सिखों के सातवें गुरु, गुरु हरि राय के ज्येष्ठ पुत्र श्री गुरु राम राय द्वारा इस स्थान की खोज सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में किया जाना तथा अपने शिष्यों के साथ इस स्थान पर डेरा जमाये जाने के कारण इस स्थान का नाम डेरा–दून पड़ा जो कालांतर में देहरादून के नाम से प्रसिद्ध हुआ। आज भी गुरु–शिष्य परंपरा का प्रतीक गुरु राम राय दरबार तथा होली के पाँचवे दिन से लगने वाला झण्डा मेला इस शहर की एक खास पहचान है। स्थानीय जन मानस के अतिरिक्त बाहरी शिष्यों का शैलाब मेले में खास आकर्षण का केन्द्र रहना स्वाभाविक है।

भौगोलिक पर्यटन तथा तीर्थाटन के अद्‌भुत संयोग को समेटे इस स्थान पर पर्यटकों के आगमन के कारण यहाँ वर्षभर चहल–पहल बनी रहती है, पर ग्रीष्म ऋतु का तो कहना ही क्या? पहाड़ों की रानी मसूरी, सहस्त्रधारा, टपकेश्वर महादेव, लक्ष्मण सिद्ध, बुद्धा टेम्पल, संतला देवी तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के अनेक संस्थान मसलन वन अनुसंधान संस्थान, भारतीय सैन्य अकादमी, वाडिया, ओ.एन.जी.सी., एन.आई.वी.एच., ऑर्डिनेन्स फैक्ट्री एवं सर्वे ऑफ इण्डिया के होने से इस स्थान की अपनी एक अलग पहचान है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छे विद्यालयों की विद्यमानता यहाँ की विशेषता है। दून स्कूल तथा वेल्हम उनमें से कुछ हैं जिनकी ख्याति पूरे देश में है। यहाँ सभी का वर्णन तो संभव नहीं है पर कुछ के बिना यह कार्य अधूरा होगा।

सैकड़ों धाराओं के कारण सहस्त्रधारा नाम से प्रसिद्ध यह स्थान देहरादून से 12 कि०मी० दूरी पर स्थित है। पहाड़ी गुफाओं से अविरल प्रवाहित चूने का पानी यहाँ के वनस्पतियों पर गिर कर उसके आवरण को पत्थर सा आकार दे देता है। यहीं पर गंधक के पानी का एक स्रोत भी है जो चर्म रोग में गुणकारी है।

शहर से छः कि.मी. दक्षिण पश्चिम में स्थित टपकेश्वर महादेव दर्शनीय स्थलों में से एक है। ऐसी मान्यता है कि गुरु द्रोणाचार्य ने इसी स्थान पर शिव की उपासना कर उन्हें प्रसन्न कर धनुर्विद्या की शिक्षा का वरदान मांगा था। वर्तमान में यहाँ भव्य मंदिर है। गुफा में स्थित शिव लिंग पर पानी टपकने के कारण इसका टपकेश्वर महादेव नाम रखा जाना प्रतीत होता है। मनमोहक प्राकृतिक छटा होने के कारण यह स्थान दर्शनार्थियों तथा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। नदी के उस पार मंदिर से लगभग आधे कि.मी. की दूरी पर स्थित नव निर्मित लेखापरीक्षा और लेखा आवासीय परिसर के गुलजार होने से मंदिर के इर्द–गिर्द की रौनक और बढ़ गई है। भगवान शिव का सानिध्य यहाँ के निवासियों को हमेशा संबल प्रदान करता है। मसूरी पर्वत शिखर के ठीक सामने आवासीय परिसर के अन्दर निर्माणाधीन महालेखाकार कार्यालय अपनी भव्यता को प्राप्त करता, लगभग पूर्ण होने की स्थिति में है, मानो पर्वत शिखर से कह रहा हो, हम किसी से कम नहीं।

देहरादून का वर्णन हो और गुच्चू पानी, मालसी डीयर पार्क, शिव मन्दिर तथा मसूरी का वर्णन न हो ऐसा हो ही नहीं सकता। गढ़ी कैंट के रास्ते मसूरी मार्ग पर अनेक दर्शनीय स्थलों में से गुच्चू पानी एक है। दो पर्वतों का मिलाप लगभग पचास मीटर तक गुफानुमा आकार के मध्य से नदी का अविरल प्रवाह तथा दो जल प्रपातों की उपस्थिति यहाँ की स्थिति को मजबूती प्रदान करता है तथा इन्हीं खूबियों के कारण यह स्थान पर्यटकों के हृदय में एक अलग स्थान बनाने में कामयाब रहा है और यही कारण है कि शुल्क की व्यवस्था होने के बावजूद यहाँ पर्यटकों की भरमार रहती है। पर वर्षा ऋतु में जाना श्रेयस्कर नहीं है। मसूरी जायें और रास्ते में शिव मन्दिर का प्रसाद ग्रहण न करें, यह कहाँ संभव है। मन्दिर बहुत बड़ा नहीं है पर शिल्प कला तथा स्थान विशेष के कारण आकर्षण का केंद्र है।

पहाड़ों की रानी के नाम से विख्यात मसूरी देहरादून से लगभग 35 कि०मी० दूर है। बांस, बुरांस व देवदार के सघन वनों से आच्छादित रंगीन टिन के छतों से बने कलात्मकता से सुसज्जित भवनों तथा स्वास्थ्यप्रद जलवायु होने से मसूरी पर्यटकों के लिए वर्षभर आकर्षण का केंद्र है, पर गर्मी के मौसम का नजारा तो देखते ही बनता है। मॉल रोड भ्रमण, गनहिल, कंपनी गार्डेन, झड़ीपानी फॉल तथा यमुनोत्री मार्ग पर मसूरी से 15 कि.मी. की दूरी पर कैम्पटी फॉल तथा 35 कि.मी. की दूरी पर ट्रैकिंग के लिये प्रसिद्ध नाग टिब्बा मनमोहक तथा आनन्द दायक है। रात्रि के समय मॉल रोड से देहरादून का नयनाभिराम दृश्य देखकर मन प्रफुल्लित हो जाना स्वाभाविक है। ऐसा प्रतीत होता है मानो धरती पर आकाश गंगा का अवतरण हुआ हो।

चाय, चीनी, चावल तथा चूने के लिए प्रसिद्ध यह शहर रेल तथा सड़क दोनों मार्गों से पूरे देश से जुड़ा है। यह स्थान अपने नैसर्गिक सौन्दर्य तथा स्वास्थ्य वर्धक जलवायु के लिए विख्यात है। प्रत्येक दिन खिलखिलाती धूप तथा कोहरे का प्रकोप न होने के कारण यहाँ की शरद ऋतु उतनी ही आनन्ददायक है जितनी ग्रीष्म ऋतु। मसूरी तथा लेखापरीक्षा आवासीय परिसर के बीच कोई अवरोध न होने के कारण, आवासीय परिसर के निवासियों का आनन्द दूना हो जाना स्वाभाविक है क्योंकि तुलनात्मक रूप से हवा आनन्ददायक तथा स्वच्छ है। कमी है तो केवल यह कि यहाँ रहने का आदी होने के बाद अन्यत्र रहना कठिन है तथा इस स्थान से बिछुड़ने की टीस जेहन में कहीं न कहीं अवश्य रहती है। इसे अस्वीकार करना बेमानी होगी। पलटन बाजार तथा राजपुर रोड दो प्रमुख व्यावसायिक केंद्र सम्पूर्ण उपभोग की सामग्रियाँ उपलब्ध कराने में सक्षम हैं। संभ्रांत शिक्षित एवं उच्च पदस्थ लोगों की पसंद होने के कारण यहाँ का रहन–सहन, तौर–तरीका तथा बात–व्यवहार लाजवाब है। लीची के पेड़ पर लीची का क्रमशः लाल होते देखना सुखद अनुभूति है।

सन् 2000 में बने उत्तराखण्ड की राजधानी के कारण भीड़ बढ़ना तथा विकास कार्यों की तेज रफ्तार स्वाभाविक है पर विकास के नाम पर विश्व प्रसिद्ध बासमती चावल की खेती प्रभावित होना दुःखद है। कंकरीट के जंगल का उगना तथा सघन वनों का क्रमशः डूबना भय पैदा करता है। यहाँ की प्राकृतिक सुषमा तथा सुहावने वातावरण के खोने का डर बना रहता है, जो यहाँ की प्राकृतिक धरोहर है। लखनऊ आवास के कारण लेखक का देहरादून तो लगभग छूटने जैसा है पर यहाँ बीते नौ वर्षों का अप्रतिम आनन्द तथा प्रत्येक स्थान के भ्रमण की मधुर स्मृतियाँ लेखक तथा उसके परिवार के मन में कहीं न कहीं बनी रहेंगी। देहरादून का ऋणी होने के कारण ईश्वर तथा जन मानस से यहाँ के प्राकृतिक धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखने की कामना के साथ सादर समर्पित।

आज और कल की कहानी

सुनील कुमार,
भाई हरि ओम, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज और कल दो भाई थे। दोनों में बहुत प्यार था। दोनों में एक ही बात रहती थी। आज सोचता था कि 'मैं बड़ा हूँ', कल सोचता था कि 'मैं बड़ा हूँ'। किन्तु एक–दूसरे से कहते नहीं थे। एक दिन दोनों भाइयों में मन–मुटाव हो गया, परन्तु इस बात को उजागर न करते हुए वह एक–दूसरे से बोले कि यह बताओ कि हम दोनों में बड़ा कौन है। दोनों भाई इस बात को सोचते रहे किन्तु इसका कुछ हल नहीं निकला। तब आज बोला कि चलो किसी तीसरे व्यक्ति से पूछते हैं। वह दोनों तीसरे व्यक्ति के पास पहुँचते हैं और उससे पूछते हैं कि हम दोनों में बड़ा कौन है। यह बात सुनकर तीसरा व्यक्ति सोच में पड़ जाता है और कुछ देर सोचने के बाद कहता है कि आप दोनों ही बड़े हैं। इस बात पर आज और कल ने फिर पूछा कि दोनों कैसे बड़े हैं। तीसरा व्यक्ति इसका कोई उत्तर नहीं दे पाता है। इस प्रकार वो दोनों बहुत से व्यक्तियों से मिलते हैं और वही प्रश्न पूछते हैं परंतु उनके प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दे पाता है। अंत में वे दोनों राजा के पास जाते हैं और यही प्रश्न राजा से करते हैं। राजा भी उनका प्रश्न सुनकर सोच में पड़ जाता है और इस बात पर बहुत गंभीरता से सोचता है। काफी सोचने के बाद राजा उनसे कहता है कि इसका निर्णय कल होगा।

दूसरे दिन दोनों भाई राजा के दरबार में पुनः उपस्थित होते हैं। तब राजा सबसे पहले आज से प्रश्न पूछता है– " जो तुम्हारे पास है वह कल के पास है क्या "। आज कहता है नहीं। इसी प्रकार का प्रश्न राजा कल से भी पूछता है तो कल भी बोलता है नहीं। तब राजा कहता है कि जो आज के पास है वो कल के पास नहीं, और जो कल के पास है वो आज के पास नहीं, तो तुम दोनों में कोई छोटा या बड़ा कैसे हुआ। तुम दोनों ही बराबर हो यदि आप दोनों सोचते हैं कि मैं बड़ा हूँ तो ये गलत है। भगवान ने सभी को बराबर बनाया है। छोटा या बड़ा तो व्यक्ति अपने कर्मों से होता है। जो जैसा कार्य करता है उसको वैसा फल मिलता है। कोई भी व्यक्ति अपने साथ कुछ लेकर नहीं आता और न ही कुछ लेकर जाता है। जो जैसा आता है वैसा चला जाता है। जो व्यक्ति समाज या देश के लिए कुछ अच्छा करते हैं उन्हें ही लोग याद करते हैं और अन्त में लोगों की नजर में वो ही बड़े और आदर्श हो जाते हैं और लोग उन्हें पूजते हैं।

खबर

अश्विनी पाण्डेय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

खबर आम हो गई है घर छोड़ जाने वालों की
तस्वीर रोज दिखायी जा रही है घर में लगे तालों की।
उन्हें कौन दिखाएगा जो मर गये जमीन से जुदा होकर
खबर कौन दिखाएगा दिल में पड़े छालों की।।

कुछ जमीन छोड़ गये कुछ आसमान छोड़ गये
कुछ अपने पुस्तैनी आलीशान मकान छोड़ गये।
ये हिन्दुस्तान की सरजमीं है गंगा जमुनी तहजीब की
क्या फर्क पड़ता है कि हिन्दु छोड़ गये कि मुसलमान छोड़ गये।।

ये हकीकत है कि आदमी टूट जाता है जमीन से उठकर
अपनों का साथ छूट जाता है जमीन से उठकर।
उन मनकों की कीमत होती भी भला कितनी है
जो बिखर जाते है जमीन पर हारों से टूट कर।।

हर ईंट दीवारों की सन्नाटे में सदा देती है
चारों तरफ फैली खामोशी मुझको भी रूला देती है।
समझ में आता नहीं है मुझको यह फलसफा गुरूर का
कि कौमें क्यू गुरूर में पीढ़ियों को सजा देती है।।

कौन कहता है कि जिंदा है वहाँ आज भी कोई
कौन कहता है कि सदा आती है वहाँ आज भी कोई।।
हर दिन नई जंग है कभी अपनों से कभी गैरों से
क्या सुनता है आसुओं की वहाँ आवाज भी कोई

उजाड़ सुनसान पड़े घरौंदों को सजाने कौन आयेगा।
नये शाखों पर फिर नीड़ बनाने कौन आयेगा
अगर मिट जायेंगी कौमें ही इस जमीन से खुद के गुरूर में
अपनों की लाश में फिर मातम मनाने कौन आयेगा।।

ये समझना होगा हमकों न तुम जुदा न हम जुदा
हिंसा की बात करता है न मेरा भगवान न तेरा खुदा।
पहचान है हमारी तब तक, जब तक सब साथ रहते हैं
बिखरे जो एक–दूजे से, तो हम भी गुमशुदा तुम भी गुमशुदा।।

राष्ट्र के एकीकरण के लिए सर्वमान्य भाषा से अधिक बलशाली कोई तत्व नहीं है। मेरे विचार से हिन्दी ही ऐसी भाषा है।

– लोकमान्य तिलक

गरीब वह नहीं जिसके पास कम है, बल्कि वह है जो अधिक चाहता है।

– पंचतन्त्र

जो आलसी नहीं है, कार्य करने की विधि जानता है, किसी भी प्रकार के व्यसन में आसक्त नहीं है, वीर है, किए हुए उपकार को मानता है और जिसकी मित्रता दृढ़ होती है, ऐसे सज्जन के पास रहने के लिए लक्ष्मी स्वयं ही उपस्थित हो जाती है।

– पंचतन्त्र

आज का दौर

अरविन्द कुमार उपाध्याय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

गहन अंधेरा चारों ओर
इस अंधेरे का ओर न छोर।
अन्दर भी है, बाहर भी है,
दिन में भी और रात में भी है
जीवन जैसे पतंग बिन डोर
गहन अंधेरा चारों ओर।
खोया चैन और अमन भी
गुम है प्यार और रहम भी
मेघ से ज्यादा नैन बरसते
कम हँसते और अधिक सिसकते
मजबूर है आज का दौर
गहन अंधेरा चारों ओर।
प्यार का सूरज, त्याग का सूरज
सत्य, निष्ठा और ज्ञान का सूरज
डूब चुका है रूठ गया है
कटती रात न होती भोर
गहन अंधेरा चारों ओर।
जग का रहबर कौन बने
पहला दीपक कौन बने
सोचो अरविन्द जरा इस ओर
गहन अंधेरा चारों ओर।

सलाम अब्दुल कलाम

अगम सिंह,
लेखापरीक्षक

भारत के मिसाइलमैन एवं ग्यारहवें राष्ट्रपति, नाम अब्दुल कलाम।
भारत माँ के उस सपूत को, कोटि–कोटि श्रद्धांजलि, कोटि–कोटि सलाम।।

15 अक्टुबर 1931 को रामेश्वर में यह महामानव धरती पर आया,
संघर्ष एवं अभाव भरा बचपन था, पर मेहनत से जी न चुराया।
पैदल स्कूल गये, अखबार बेचकर पढ़ाई हेतु धन कमाया,
धन दौलत तो लुटा न सके, माँ–बाप ने लाड–प्यार खूब बरसाया।।

मेहनत करने वालों के कदम चूमती सफलता, ऐसा दे गये पैगाम।
भारत माँ के उस सपूत को, कोटि–कोटि श्रद्धांजलि, कोटि–कोटि सलाम।।

भारतीय अंतरिक्ष उपग्रह प्रेक्षण कार्यक्रम को सफल बनाया,
रोहिणी उपग्रह को प्रेक्षित कर, नया कीर्तिमान बनाया।
समर्पण किया राष्ट्रहित इतना, भारत रत्न का सम्मान भी पाया,
राष्ट्रपति का पद सुशोभित किया, पर सादा जीवन ही अपनाया।।

युगों–युगों तक हम ऋणी रहेंगे उनके, कर गये वो ऐसे काम।
भारत मां के उस सपूत को, कोटि–कोटि श्रद्धांजलि, कोटि–कोटि सलाम।

त्रिशूल, पृथ्वी, ब्रहमोश आदि मिसाइलों का किया विकास,
भारत को गिद्द दृष्टि से देखने वाले, अब हो गये उदास।
11 व 13 मई 1998 को सफल परमाणु परीक्षण से रचा नया इतिहास,
हमें परमाणु युद्ध की धमकी का, न सफल होगा शत्रु का प्रयास।।

संन्यासी जैसा जीवन बिताया, मानो देश सेवा ही था उनका काम।
भारत माँ के उस सपूत को, कोटि–कोटि श्रद्धांजलि, कोटि–कोटि सलाम।।

27 जुलाई 2015 को आपने ली मृत्युलोक से जुदाई,
जर्रा–जर्रा शोक संतप्त था, ऐसी मातम की घड़ी आई।
सिर्फ भारत माता ही नहीं रोई, विश्व भर में उदासी छायी,
अमेरिका जैसे राष्ट्रों ने भी राष्ट्रध्वज झुकाकर संवेदना जताई।।

पार्थिव शरीर विलीन हुआ पंचतत्व में, पर अमर रहेगा नाम।
भारत माँ के उस सपूत को, कोटि–कोटि श्रद्धांजलि, कोटि–कोटि सलाम।

उत्कृष्टता वो कला है जो प्रशिक्षण और आदत से आती है। हम इसलिए सही कार्य नहीं करते कि हमारे अंदर अच्छाई या उत्कृष्टता है, बल्कि वो हमारे अंदर इसलिए है क्योंकि हमने सही कार्य किया है। हम वो हैं जो हम बार–बार करते हैं। इसलिए उत्कृष्टता कोई कार्य नहीं बल्कि एक आदत है।

– अरस्तु

घर ही राष्ट्र का निर्माण करते हैं।

– जोजेफ कुक

जब जनता यह अनुभव कर सकती है कि अपनी मर्जी का भाग्य अपने हाथों बना सकते हैं, तब समझना चाहिए कि पूरा स्वराज्य मिल गया ।

– महात्मा गांधी

मेरा प्रदेश: राजस्थान

सुखीराम मीणा,
डी0ई0ओ0

गौरवशाली अमिट धरोहर
वीरों की यह शान है,
हर राज्य में लगता मुझको
प्यारा राजस्थान है।

विविध लोक संस्कृति है मिलती
अलग–अलग भू–भागों में,
विविध बोलियाँ, विविध शैलियाँ
है इसके जन रागों में,
ललचाये मन खाने को व्यंजन
ऐसे लजीज पकवान हैं,
हर राज्य में लगता मुझको
प्यारा राजस्थान है।

देश–विदेश से लोग हैं आते
झलक इसकी पाने को
वन्यजीव स्थल से लेकर
रेतीले मैदानों की,
यहीं बनी सूफी दरगाहें
यहीं बालाजी का स्थान है
हर राज्य में लगता मुझको
प्यारा राजस्थान है।

दुर्ग किलों से सुसज्जित नगरी
राजघरानों की यह धरती
पावन–परम पुनीत सदा ही
योद्धाओं की जय–जय करती,
माटी के कण–कण में बसता
वीरों का गुणगान है,
हर राज्य में लगता मुझको
प्यारा राजस्थान है।

सफलता

राकेश रंजन मिश्रा,
हिंदी अधिकारी

युग–युग का अंदाज है सफलता
प्रेरणा और जिज्ञासा का संगम है सफलता,
कार्य का अंजाम है सफलता
गिर–गिर कर उठना है सफलता।

संकल्प का दूजा नाम है सफलता
विश्वास और विकास है सफलता,
कर्म का एहसास है सफलता
सार्थक जीवन ही है सफलता।

सामर्थ और प्रतिभा है सफलता
आपसी सहयोग और उन्नति है सफलता,
द्वेष भाव का त्याग है सफलता
लक्ष्य का अंतिम पड़ाव है सफलता।

आत्मा की अनुभूति है सफलता
आलोचना और ईर्ष्या है सफलता,
निःस्वार्थ भावना और ज्ञान है सफलता
सबकी पहचान है सफलता।

"कार्य ही सफलता की बुनियाद है।" – **पाब्लो पिकासो**

एक मुलाकात

अश्विनी पाण्डेय,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कल शाम उनसे अचानक ही मुलाकात हो गई
आखों ही आखों में दिल की सारी बात हो गई
वही मासूम चेहरा नरगिसी निगाहें
लताओं सी घिरती वही संगमरमरी बाहें
याद आने लगा वो मुहब्बत का गुजरा जमाना
बात–बात में उनका रूठना मनाना
फिर वो शाम जब हम अन्तिम बार मिले थे
आखें में फिर भी न शिकवे न गिले थे
वो मर्यादा की दहलीज पार कर मेरे पास आ न सकी थी
समाज की रवायतें छोड़ मेरा घर बसा न सकी थी
मेरी मुहब्बत भी उन्हें मेरे पास ला नहीं पायी
चन्द कदम चल कर वो मेरे पास आ नहीं पायी
मै भी समाज से टकराकर चूर हो गया
कसम दी थी उन्होंने वफाओं की मैं मजबूर हो गया
फिर अन्तिम बार गले मिलकर जार–जार रो लिए
आँसुओ में सारे वफाओं के वादें दोनों ने धो लिए
फिर राह दोनों की खुद जुदा हो गयी
पर जुदा होकर भी वो मेरी खुदा हो गयी
मेरे कानों में आज भी उनके मखमली लफ्ज गूंजते हैं
हम आज भी उनको खुदा की तरह पूजते हैं
मर कर भी याद उनकी जुदा हो जाये ये मुमकिन नहीं
मेरे खातिर वो जमाने में रूसवा हो जाये ये मुमकिन नहीं
इसलिए जमाने की निगाह में वो अन्जान नजर आती है।
पर मिलकर उनसे दिल से आह मगर आती है।

समय को टालें नहीं

श्रीमति संजू रानी,
लेखापरीक्षक

अक्सर यह देखा गया है कि वर्तमान में अधूरा छोड़ा गया काम हमेशा के लिए अधूरा ही रह जाता है। यह हमारी आदत होती है कि जो काम हमें करना होता है उसे हम तब तक टालते रहते हैं जब तक कि हमें उससे कोई हानि न हो जाये। इन आदतों की वजह से हमें कई परेशानियों का सामना भी करना पड़ता है। यही वजह है कि आचार और व्यवहार आज पर आधारित होने चाहिए न की कल पर। कल कभी नहीं आता, जोकि कटु सत्य है। भविष्य पर न किसी की पकड़ होती है और न अधिकार। हमारा जीवन और व्यवहार आज पर आधारित होता है, इसलिए आज को ही पूरा महत्व देना चाहिए। कल पर टाला हुआ कार्य अंधेरे की ओर ले जाता है अर्थात कल समय ही जब सुनिश्चित नहीं है तो कल पर टाला हुआ काम कैसे सुनिश्चित हो सकता है। जीवन के हर छोटे–बड़े कार्य में सफल होने के लिए यह बहुत जरूरी है कि हम अपने कार्यों को समय रहते हुए निपटा दें। यह महत्वपूर्ण सूत्र है कि समय को चूकने वाला सफलता से वंचित रह जाता है। अतः सावधानीपूर्वक हमें अपने कार्य के प्रति जागरूक होकर रहना चाहिए। समय के प्रति यही सजगता हर युवा को सफलता की ओर ले जायेगी। समय को टालें नहीं, इसी बात को ध्यान में रखते हुए कुछ बातें निम्न प्रकार है :

समय अमूल्य है, यह धन से कहीं ज्यादा कीमती है, धन आज है कल नष्ट हो जायेगा। परसों फिर आ सकता है लेकिन जो समय अतीत के गर्त में समा गया वह लाख चाहने पर भी लौटकर नहीं आ सकता। कहा भी गया है कि जो समय को नष्ट करता है, समय उसे नष्ट कर देता है। प्रत्येक कार्य के लिए समय निश्चित है कि किस समय क्या करना है? प्रशासन में शामिल लोगों से लेकर मार्ग की सफाई करने वालों के लिए भी समय का निश्चित कर्म है। व्यापारियों के लिए एक घंटे का व्यवधान भी बड़े घाटे का कारण बन सकता है। कहीं भी जाना हो, कुछ भी करना हो नियम व संयम से समय के अनुसार होना चाहिए। मौके को चूकने वाला व्यक्ति अथवा मौके का उपयोग न करने वाला कभी भी उन्नति की ओर अग्रसर नहीं होता।

किसी भी काम को चुनते समय अपनी रुचियों व अरुचियों का ध्यान रखते हुए भली प्रकार से सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए। यदि हम अपनी क्षमता से अधिक कठिन काम का चयन कर लेते हैं तो वह बेकार हो जाता है। इससे बोरियत भी होती है और जब काम हमारे मन मुताबिक नहीं होता है तब हम उसे टालने लगते हैं। अतः जीवन का कोई भी क्षेत्र क्यों न हो

यदि कार्य प्रारम्भ करने से पहले सोच समझ कर निर्णय नहीं लिया गया तो बाद में हाथ मलने के सिवाय कुछ नहीं बचता। फिर हमें लगता है कि जब समय था, तब हमने सोचा ही नहीं। जब काम बिगड़ जाता है तो पश्चाताप के सिवाय कुछ नहीं बचता।

आज के युवा कल्पनाशील हैं तथा महत्वाकांक्षी भी। वह अपने आने वाले भविष्य के लिए अनेक प्रकार की सुखद कल्पनायें करते हैं और कल्पनाओं में घूमते रहते हैं। वह अपने जीवन का एक निश्चित लक्ष्य तय करें तथा समय के महत्व को समझते हुए लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठोर प्रयास करें और जब लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करेंगे तो वह प्राप्त भी अवश्य होगा।

सम्पन्न और उन्नतिशील भविष्य की रूपरेखा बनाने में आसानी तभी होगी जब समय के मूल्य को हम समझ पायेंगे। इसके विपरीत जो युवा अपना लक्ष्य व समय निर्धारण किये बिना जीवन पथ पर अग्रसर होता है उसकी स्थिति दिशाहीन होकर इधर–उधर भटकने वाले पथिक के समान होती है। सन्त कबीर ने कहा भी है कि–

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परले होयेगी, बहुरि करेगा कब।।

अंत में : दुनिया का सबसे बड़ा जेवर आपकी मेहनत है। याद रहे कि जो हाथ सेवा के लिए उठते हैं वे प्रार्थना करने वाले होठों से अधिक पवित्र है। स्वार्थ में अच्छाइयां ऐसे खो जाती है जैसे समुद्र में नदियां। सत्य से कमाया धन हर प्रकार से सुख देता है किन्तु छल व कपट से कमाया धन सदैव दुख देता है। ऐसी सुख समृद्धि किस काम की जिसमें अंहकार हो और ऐसा धन किस काम का जो कि बेकाबू होकर दिशाहीन हो जाए।

हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

पर्यावरण प्रदूषण

आनन्द कुमार पाण्डेय,
एम0टी0एस0

पर्यावरण शब्द परि+आवरण के संयोग से बना है। 'परि' का आशय चारों ओर तथा 'आवरण' का आशय परिवेश है। अगर हम दूसरे मतलब से समझें तो पर्यावरण अर्थात वनस्पतियों, प्राणियों और मानव जाति सहित सभी सजीवों और उनके साथ संबंधित भौतिक परिसर को पर्यावरण कहते हैं।

वास्तविकता में देखा जाय तो पर्यावरण में वायु, जल, भूमि, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मानव और उसकी सभी गतिविधियों के परिणाम आदि सभी का समावेश होता है।

पर्यावरण प्रदूषण की समस्या : विज्ञान के क्षेत्र में असीमित प्रगति तथा नये आविष्कारों की स्पर्धा के कारण आज का मानव प्रकृति पर पूर्णतया विजय प्राप्त करना चाहता है। इस कारण प्रकृति का संतुलन बिगड़ गया है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के साथ–साथ प्राकृतिक संतुलन भी बनाए रखना नितांत आवश्यक है। जनसंख्या की निरंतर वृद्धि, औद्योगीकरण एवं शहरीकरण की तीव्र गति पर्यावरण को असंतुलित कर रहा है। हम इन बातों को जानते हुये भी कुछ कर नहीं पा रहे हैं। इसका अफसोस हम सभी को है। लेकिन कदम तो उठाना पड़ेगा, नहीं तो हमारी पर्यावरण समस्या विकराल रूप धारण कर लेगी।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व : पर्यावरण संरक्षण का समस्त प्राणियों के जीवन तथा इस धरती के प्राकृतिक परिवेश से घनिष्ठ संबंध है। प्रदूषण के कारण सारी पृथ्वी दूषित हो रही है। यह मानव जीवन के लिए खतरे की घंटी है। इस स्थिति को ध्यान में रखकर सन् 1992 में ब्राजील में विश्व के 174 देशों का पृथ्वी सम्मेलन आयोजित किया गया।

इसके पश्चात सन् 2002 में जोहन्सबर्ग में पृथ्वी सम्मेलन आयोजित कर विश्व के सभी देशों को पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान देने के लिए अनेक उपाय सुझाए गए। वस्तुतः पर्यावरण के संरक्षण से ही धरती पर जीवन का संरक्षण हो सकता है, अन्यथा मंगल आदि ग्रहों की तरह धरती का जीवन चक्र भी एक दिन समाप्त हो जायेगा।

पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभाव : पर्यावरण प्रदूषण के कुछ दूरगामी दुष्प्रभाव हैं, जो अति विस्फोटक हैं। जैसे – आण्विक विस्फोटों से रेडियोधर्मिता का आनुवांशिक प्रभाव, वायुमंडल का तापमान बढ़ना, ओजोन परत की हानि, भू–क्षरण आदि ऐसे घातक दुष्प्रभावों के कारण जल, वायु तथा परिवेश का दूषित होना एवं वनस्पतियों का विनष्ट होना, मानव का अनेक नये रोगों से आक्रांत होना आदि के रूप में देखे जा सकते हैं। बड़े कारखानों से निकलने वाले विषैले अपशिष्ट तथा प्लास्टिक आदि के कचरे का उचित निस्तारण न करने से प्रदूषण उत्तरोत्तर बढ़ रहा है।

कैसा लोकतन्त्र?

हरि ओम,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लोकतन्त्र अर्थात जनता का शासन। यही इसकी परिभाषा है और सभी लोगों ने पढ़ी भी होगी। इस तंत्र में जनता अपने शासनाध्यक्ष को चुनती है और फिर वह शासनाध्यक्ष कुछ समय तक जनता पर राज करता है और यह प्रक्रिया कुछ समय अंतराल पर निरंतर चलती रहती है। आज दुनिया के लगभग सभी देशों में यही व्यवस्था प्रचलन में है। भारत भी उनमें से एक है। भारत को गुलामी से आजाद हुए 70 वर्ष हो गये और इस अवधि के दौरान भारत में हर क्षेत्र में काफी प्रगति हुई है, चाहे वो एक तरफ कृषि क्षेत्र हो या दूसरी तरफ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, सभी क्षेत्रों में अच्छा काम हुआ है। तो जाहिर सी बात थी कि जब सभी क्षेत्रों में विकास हुआ तो लोकतन्त्र भी विकसित होना था। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या लोकतन्त्र भी वाकई विकसित हुआ और हुआ तो कैसे हुआ? अगर मुझसे यह प्रश्न पूछा जाए तो मैं कहूँगा "हाँ" बेशक हुआ।

वैसे तो लोकतन्त्र को विकसित करने में कई चीजों का योगदान है परन्तु इसमें सबसे मुख्य वस्तु है– "पैसा"। इसने लोकतन्त्र में अपनी अच्छी खासी पहचान स्थापित की है। इसकी वजह से आज लोकतन्त्र का स्वरूप बदलता जा रहा है। लोकतन्त्र पैसा–तंत्र में बदलता जा रहा है। भारत में तो शायद कुछ वर्षों में इसकी परिभाषा ही बदल जाए। कोई भी चुनाव हो, चाहे वो छोटे स्तर का हो या बड़े स्तर का, पैसे के बगैर हो ही नहीं सकता और यहाँ पैसे का मतलब चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित किया गया चुनावी खर्च नहीं है। वो तो चुनाव में होने वाले कुल खर्च की तुलना में ऐसा है जैसे रेस्टोरेन्ट में खाना खाने के बाद वेटर को दी गई टिप।

भारत में ग्राम पंचायत स्तर का चुनाव देखने का अगर किसी को सौभाग्य मिला हो तो शायद उसे पता होगा कि वहाँ इस दौरान किस तरह का रोमांचकारी माहौल होता है। यह किसी भागवत कथा से कम नहीं होता। भागवत कथा की अवधि तो आठ से दस दिन तक ही होती है परंतु इसका कार्यक्रम तो तीन से चार महीने पहले ही शुरू हो जाता है। इस दौरान उम्मीदवारों द्वारा जनता की ऐसी सेवा की जाती है कि उसका जितना व्याख्यान किया जाए कम है। जनता की सारी सुख–सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाता है। जितने भी उम्मीदवार होते हैं सभी के यहाँ चौबीस घंटे खान–पान, जल–पान से लेकर सिनेमाहॉल तक का सारा प्रबंध रहता है। इतनी व्यवस्था तो किसी के घर में शादी–बारात में भी नहीं होती होगी जितनी

इस दौरान होती है और हाँ जनता भी पाँच साल बाद उसको मिले इस अवसर का भरपूर लाभ उठाती है। वो भी किसी प्रकार की कोई कमी नहीं छोड़ती।

इस सबके बाद इस महापर्व की निर्धारित तारीख से ठीक एक दिन पहले जनता को स्पेशल न्यौता दिया जाता है, जिसमें उसको बोनस के तौर पर कुछ राशि प्रदान की जाती है और यह बोनस अन्य बोनस से भिन्न होता है। इसके दो कारण हैं– 1. अन्य बोनस तो जो कार्य पहले हो चुका है उसके लिए दिया जाता है परन्तु यह आगे किए जाने वाले कार्य के लिए दिया जाता है। 2. इस बोनस की वसूली भी हो सकती है। जनता भी काफी समझदार होती है, वो कई जगह से बोनस का लाभ उठाती है। इस सब के अलावा भी इस दौरान अन्य प्रकार के कई कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है और इसी क्रम में आखिर में वो दिन भी आ जाता है जिस दिन के लिए यह सारी सुख–सुविधाएं जनता को प्रदान की जाती हैं। इस दिन की सबसे खास बात यह होती है कि आपको शायद किसी भी आयोजन के दौरान इतने लोगों से मिलने का मौका नहीं मिलेगा जितने लोगों से इस दिन मिल जाता है। जिसको आपने कभी नहीं देखा हो उसके भी इस महापर्व के दिन आपको दर्शन हो जाएंगे।

इस सबके बाद जब इस महापर्व का समापन हो जाता है तब जनता को मिलने वाली सारी सुख–सुविधाएं बंद हो जाती हैं और इसके परिणाम का इंतजार होने लगता है। इस दौरान जनता का दूसरा कार्य शुरू हो जाता है– Exit Poll. खैर यह सब होने के बाद वो दिन भी आ जाता है जब इसका पिटारा खुलता है। यह दिन तो शायद इतिहास में दर्ज होने लायक होता है, क्योंकि यही एक मात्र ऐसा अकेला दिन होता है जो खुशी और गम दोनों एक साथ लेकर आता है। जनता यहाँ भी पीछे नहीं हटती है, वो सिर्फ जीतने वाले के साथ खड़ी होती है, चाहे बोनस किसी से भी लिया हो और हारने वाले के यहाँ तो शायद ऐसा लगता है जैसे किसी का अंतिम संस्कार करके आये हों। चूंकि इन लोगों की संख्या भी अधिक होती है तो यह दिन किसी अकाल से कम नहीं होता है।

इन कार्यक्रमों के बाद जनता की सेवा का तीसरा सत्र शुरू होता है जिसमें मुख्य भूमिका हारने वालों की होती है। इसमें भी कई प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं जो प्रारम्भ के कार्यक्रमों से भिन्न होते हैं जैसे– बोनस की वसूली, मार–पीट आदि। यह समय जनता के लिए किसी त्रासदी से कम नहीं होता क्योंकि इस दौरान उसको प्रदान की गयी सारी सेवाओं की वसूली होती है।

अब यह सब कार्यक्रम समाप्त होने के बाद चौथा सत्र शुरू होता है जो वास्तव में कभी शुरू नहीं होता। इस दौरान पाँच साल तक कोई कार्य और किसी कार्यक्रम का आयोजन नहीं होता। और जनता पाँच साल बाद आने वाले इस महापर्व का फिर से इंतजार करने लगती है।

यह सब देखने के बाद मेरे मन में आया कि यह कैसा लोकतन्त्र है? यहाँ तो न जनता को लोकतन्त्र का मतलब पता है और न जनता के शासक को। मुझे उम्मीद है भारत में 50 से 60 साल पूर्व में इस तरह की व्यवस्था शायद नहीं होगी और अगर होगी भी तो आज जैसी तो नहीं होगी। इसका मतलब तो यही हुआ कि अन्य चीजों के साथ लोकतन्त्र भी विकसित हो गया।

चूंकि अब प्रश्न यह उठता है कि इस व्यवस्था के लिए जिम्मेदार कौन है? तो मेरे विचार से इसके लिए जनता और जनता का शासक दोनों ही जिम्मेदार हैं, और इसका मूल कारण है– अशिक्षा। अशिक्षित जनता को शायद यह नहीं पता होता कि चुनाव क्यों होता है, वो वोट क्यों डालती है, क्यों अपना शासक चुनती है, और उस शासक की क्या जिम्मेदारियाँ हैं और जनता की इसी अनभिज्ञता का फायदा उठाकर, उसको लालच देकर राजनीतिक दल या शासक अपने मकसद में कामयाब हो जाते हैं। और इसी का परिणाम है कि आज राजनीति का स्वरूप ही बदलता जा रहा है, भ्रष्टाचार जैसी कई समस्याएं दिन–प्रतिदिन सामने आ रहीं हैं।

अंत में मन में प्रश्न आता है कि क्या इस जटिल समस्या का कोई उपाय हैं? तो इसका एक ही उपाय है– शिक्षित समाज। शिक्षा रूपी अस्त्र से संसार की किसी भी समस्या से निजात पायी जा सकती है।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।

– सुमित्रानंदन पंत

मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी, वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करोगे तो हिन्दी का दर्जा बढ़ेगा।

– महात्मा गांधी

भारत के विभिन्न प्रदेशों के बीच हिन्दी प्रचार द्वारा एकता स्थापित करने वाले व्यक्ति ही सच्चे भारतीय बन्धु हैं।

– महर्षि अरविन्द घोष

'सफलता का मंत्र–आत्मविश्वास, कड़ा परिश्रम एवं धैर्य'

योगेश त्यागी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जीवन की कोई भी सफलता तीन स्तम्भों पर टिकी होती है– आत्मविश्वास, कड़ी मेहनत एवं धैर्य। इनमें से एक भी कमजोर पड़ा तो मंजिल तक पहुंचना कठिन है। यहाँ मैंने 'कठिन' शब्द का प्रयोग किया है, 'नामुमकिन' का नहीं क्योंकि जिन्दगी के किसी मोड़ पर यदि आप विफल हो जाते हैं तो घबराएं नहीं, उठकर फिर मंजिल की ओर चल पड़िए। हम किसी कार्य में इसलिए कामयाब नहीं हो पाते हैं क्योंकि हम उसके बारे में पूरी तरह विश्वस्त नहीं होते है। ऐसे में हमें अपनी सोच बदल देनी चाहिए। जीवन में हमें कोई भी लक्ष्य मिले या फिर कोई भी कार्य मिले, उसे पूरा करने के लिए हमें सदैव तत्पर रहना चाहिए तथा अपने जीवन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपना शत–प्रतिशत लगा देना चाहिए। शेर भी वन में यदि शिकार करता है तो अपनी शत–प्रतिशत ऊर्जा अपने शिकार को पाने में लगा देता है। सर्वप्रथम तो हमें लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने मन में विश्वास जागृत करना है। दूसरा लक्ष्य को पाने की राह में बहुत से आलोचक मिलेंगे, परन्तु हमें अपने पथ पर डटे रहना है मार्ग से विचलित नहीं होना है। जीवन का अर्थ भी यही है कि हम बाधाओं से जूझते हुए प्रगति की ओर निरन्तर बढ़ते चले जाएं क्योंकि हार कर बैठे रहने का नाम जीवन नहीं है।

अतः दृढ़ इच्छाशक्ति, स्वंय पर विश्वास, कठोर परिश्रम एवं धैर्य ही सफलता का मूल मंत्र है। यही सन्देश हमें अपनी भावी पीढ़ी को देना चाहिए।

"सृजनात्मक विचार ही सृजनात्मक कार्य को जन्म देते हैं।

मैं कहता हूँ आप अपनी भाषा में बोलें, अपनी भाषा में लिखें। उनको गरज होगी तो वो हमारी बात सुनेंगे। मैं अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिन्दी भाषा का दर्जा बढ़ेगा।

– महात्मा गाँधी

पाती बीते दिनों की बाती

प्रभाकर दुबे,
लेखा परीक्षा अधिकारी

पाती को पाते ही
छाती जुड़ाती थी।
मन को बहलाने की,
बहुत बड़ी थाती थी।।
पाती बीते दिनों की बाती।
हर खुशी व हर गम में,
जीवन के हर पल में।
साथ निभाती थी।
पाती बीते दिनों की बाती।
सीमा के प्रहरी को
परदेशी व शहरी को।
बिछुड़न की पीड़ा में,
ढांढस बंधाती थी
पाती बीते दिनों की बाती।
प्रेमी के बस्ते में
पुस्तक के पन्नों में
छुप कर वह जाती थी
पाती बीते दिनों की बाती।
डाकखाना व डाकिये की
शान थी वह
हर गली व मुहल्ले में
उसकी पहचान थी वह।
माँ की बेटी से
बेटी की माँ से
बात कराती थी
पाती बीते दिनों की बाती।
दूरभाष ने दूरी को,
कम तो किया जरूर है।
पर पाती से वह
कोसो दूर है।
विरह की वेदना में
बुझे हुए दिल की
दवा बन जाती थी।
पाती बीते दिनों की बाती।

ऑनर किलिंग (मानरक्षा हत्या)

सुश्री रेखा,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

यह सत्य है कि 'There is no honour in killing' अर्थात् हत्या में सम्मान जैसी कोई बात नहीं है। फिर यह ऑनर किलिंग किस सम्मान मृत्यु की बात करती है। पिछले कुछ वर्षों से चर्चा में बनी हुई हैं 'खाप पंचायतें' एवं ऑनर किलिंग। इस मानरक्षा मृत्यु की शिकार अधिकतर महिलाएं हैं, जिनको परिवार की मान–मर्यादा एवं इज्जत के नाम पर मौत के घाट उतारने के फरमान सरेआम इन पंचायतों द्वारा दिए जा रहे हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, बिहार आदि राज्यों में यह दकियानूसी भरा माहौल पनपा हुआ है। जिन पंचो को न्याय के देवता के तौर पर हम प्रचीन काल से इतना सम्मान देते आए हैं उन्होने ही हमारी सामाजिक व्यवस्था में खलबली मचा रखी है।

ये खाप पंचायतें कोई आम पंचायत नहीं हैं बल्कि नेता और विधायक लोगों का अपने क्षेत्र में दबदबा होता है इनके माध्यम से। ये इतनी शक्तिशाली कैसे हो गयी हैं कि इनको किसी से कोई भय नहीं है। यह सत्य है कि अभी तक इनकी रोकथाम का कोई कानून नहीं बना है और यह भी सत्य है कि हमारे यहाँ बाल–विवाह, दहेज हत्या/प्रथा जैसे जो कानून बने हुए हैं, उनके बावजूद भी ये जुर्म होते रहते हैं। केवल कानून इसका हल नहीं है। लोगों की मानसिकता और नजरिया इसका सबसे बड़ा दोषी है, जो अभी भी जाति–पाँति, ऊँच–नीच जैसी परम्पराओं को ढोता आ रहा है। इन परम्पराओं के खिलाफ जाने वालों के लिए सीधे मृत्यु का फरमान सुनाना कहाँ तक न्यायसंगत है?

आज हम 21वीं शताब्दी में जी रहे है जहाँ 'महिला उत्थान' की बातें की जा रही हैं, वहाँ यह मध्ययुगीन मानसिकता से जकड़ी 'ऑनर किलिंग' क्यों खत्म नहीं कर पा रहे हैं। भारत देश की विविधता जगजाहिर है। इतने हजार साल की संस्कृति है हमारी। इस संस्कति में 'प्रेम' और सौहार्द की खुशबू समाहित है, वहाँ ये रूढ़िवादी अभी भी 'युवक–युवती' के प्रेम को सम्मान के विरुद्ध देख रहे हैं। खाप पंचायतों के खौफनाक फरमानों से यह तो स्पष्ट है कि ये अभी तक आधुनिक समाज की बदली हुई विचारधाराओं से न तो सामंजस्य बैठा पा रही हैं और न ही अपने चरित्र में किसी तरह का बदलाव लाने को तैयार हैं।

प्रेम–विवाह की संकल्पना भी नवीन नहीं है बल्कि इसके प्रमाण हमें अपने प्राचीन ग्रंथों एवं इतिहास के अन्य स्रोतों से प्राप्त होते रहते हैं। आज के समय में ऐसा क्या हुआ जो ये

दकियानूस लोग इन संबंधों को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं। इसकी गहरी जांच–पड़ताल करें तो शायद इसकी जड़ में जाति–प्रथा एक मुख्य कारण है। क्योंकि दूसरी जाति के युवक–युवती से प्रेम करना या प्रेम विवाह करने से ही मौत के फरमान निकाले जाते हैं। इसका अर्थ हुआ कि जब तक जाति प्रथा खत्म नहीं होगी 'ऑनर–किलिंग' भी बंद नहीं होगी।

जिस प्रकार हमारे देश में अन्य कानूनों को ताक पर रखकर अपराध किए जा रहे हैं वैसे ही 'खापों' के लिए कानून बनाने पर उसका भी यही हश्र होगा। जाति प्रथा तो हमारे समाज में पहले ही से व्याप्त है। इसे आज तक मिटा नहीं पाए हैं, हाँ कमी जरुर हुई है। आज हम 'रोटी–बेटी' के नाते की बात तो करते हैं पर हकीकत में बगले झांकने लगते हैं। केवल कानून ही से सब नहीं सुधारा जा सकता है। जिस प्रकार शिक्षा व्यवस्था ने जाति–प्रथा पर कुठाराघात किया है वैसे ही यह रुढ़िवादी विचारों पर भी प्रहार करेगी। जरूरत शिक्षा को बढ़ावा देकर खाप क्षेत्रों के लोगों की मानसिकता पर जमी धूल को साफ करने की है ताकि ये लोग इज्जत और सम्मान का सही अर्थ समझने में सक्षम हो सकें। जिन क्षेत्रों में इस तरह की घटनाएं होती हैं वहाँ कोई इस घिनौनी हरकत के लिए आवाज नहीं उठाता है। कुछ माता–पिता भी स्वयं अपने ही हाथों से अपनी इज्जत के लिए बेटी की हत्या कर रहे हैं। केवल पंचायतें ही दोषी नहीं हैं, बल्कि इनका फरमान सुनने वाले और सरेआम इनके हुक्म की तामील करने वाले भी उतने ही दोषी हैं। कितनी ही युवतियों को घर में ही खाने में जहर मिलाकर, गला दबाकार हत्याएं की जा रही हैं, जिनका जिक्र नहीं होता है। क्या आप लोगों की रुह नहीं कांपती यह सोचकर कि इज्जत होती क्या है इन लोगों की परिभाषा में जिसके लिए किसी की जान की कोई कीमत नहीं होती इनके लिए। मेरी तो रुह कांपती है सोचकर और सुनकर कि किसी की जिंदगी कैसे कोई ले लेता है और हम मूकदर्शक बने अगली घटना का इंतजार करते रहते हैं।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

मेरा प्यार मेरी जिन्दगी

सूर्य पाल,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जख्मों से भरे दिल में करार बन के आई,
उजड़े हुए चमन में बहार बन के आई,
बरसों से मेरी झोली सूखी हुई पड़ी थी,
ऐसे में खुशियों की तू फुहार बन के आई,
फैली थी नाउम्मीदी हर ओर जब हमारे,
जिन्दगी में कामयाबी का खुमार बन के आई,
मुह मोड़ लिया सबने मुश्किलों के दौर में जब,
उस दौर में मिलने को तुम त्यौहार बन के आई,
थक गया था जिन्दगी से मरने की चाह होने लगी थी,
'सूर्या' की जिन्दगी में उपहार बन के आई,
जख्मों से भरे दिल में करार बन के आई,
उजड़े हुए चमन में बहार बन के आई।।

राजभाषा के रूप में हिन्दी देश की एकता में अधिक सहायक होगी। इस पर दो मत हो ही नहीं सकते ।

– पं. जवाहर लाल नेहरू

ढूँढ लाऊँगा

हरीश कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मुश्किल माहौल पर चाहे जितनी मंडराए।
चाँदनी बिखर के चमके वो रात ढूँढ लाऊँगा।।

काँटे ही काँटे क्यों न हो राहों पर।
काँटो से छीनकर फूलों की सौगात ढूँढ लाऊँगा।।

धूमिल धरती चाहे जितनी थरथराए।
आसमां थम जाए वो ख्यालात ढूँढ लाऊँगा।।

शोले ही क्यों न चुभ जाएं निगाहों पर।
सूरज जल जाए वो आग ढूँढ लाऊँगा।।

भटकते भाग्य चाहे गर्दिश में क्यों न हों।
भाग्य बदल जाए ऐसी कोई बात ढूँढ लाऊँगा।।

लहरें चाहे जितनी बलखाए बाहों पर।
सागर सिमट जाए वो हालात ढूँढ लाऊँगा।।

चाहे अटल हिमालय क्यों न आए सामने।
हिमालय को झुका दे वो हाथ ढूँढ लाऊँगा।।

प्यास पतझड़ पनपे चाहे बहारों पर।
पतझड़ से चुराकर बहारों की वो बारात ढूँढ लाऊँगा।।

अँधेरी घटाएँ चाहे कितनी मंडराए।
निशा की कालिमा से प्रभात ढूँढ लाऊँगा।।

छुपे चाहे जितनी मुझसे मेरी मंजिल।
बेचैन करती धूप से बरसात ढूँढ लाऊँगा।।

खेलों में भारत का गिरता स्तर

अजय त्यागी,
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

सवा अरब जनसंख्या वाले देश में आज भी हमारे पास खेलों के लिये मजबूत ढाँचा एवं सुविधाओं की कमी है। आज स्कूल स्तर पर दी जाने वाली शिक्षा में खेलों के प्रोत्साहन के नाम पर कुछ नहीं है। ना ही स्कूलों में खेलों पर कोई विषय वस्तु तैयार की गई है ना ही प्राईमरी, बेसिक एवं माध्यमिक स्तर पर कोई पाठ्य सामग्री है। भारत जैसे देशों में जहाँ अभिभावकों के पास अपने बच्चों के लिये खेलों से सम्बन्धित ना तो कोई कार्यक्रम है ना कोई योजना है, ऐसे में स्कूल प्रबन्धन की जिम्मेदारी है कि वें स्कूली स्तर पर खेल के विषय को अनिवार्य विषय बनायें जिसके अन्तर्गत लिखित एवं शारीरिक शिक्षा की परीक्षा के उपरान्त प्राप्त अंको को उनकी मुख्य परीक्षा के अंको के साथ सम्मिलित किया जाये जिससे प्राथमिक स्तर से ही बच्चों की रुचि खेलों में बढ़े एवं देश को होनहार प्रतिभायें प्राप्त हों। जैसा कि विदित है, स्कूली स्तर पर खेल के बढ़ावे के लिये अभी तक न तो खेल मंत्रालय द्वारा उचित दिशा–निर्देश दिये गये हैं न ही स्कूल प्रबन्धन ने इसे गंभीरता से लिया है। हमारा देश एक विकासशील एवं संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र में एक है। परन्तु अफसोस की बात है कि आज भी हमारे देश की 40 प्रतिशत जनसंख्या गरीबी रेखा के नीचे निवास करती है। गरीब बच्चों के पास पेट भरने के लिये संसाधन नहीं है तो क्या आप कल्पना कर सकते है कि वे अपना योगदान खेलों में दे सकते है। हम जानते हैं कि भारत की 60 प्रतिशत आबादी गाँव में निवास करती है। गाँव स्तर पर स्कूलों की कमी, संसाधनों की कमी एवं सरकार द्वारा ग्रामीण स्कूलों में खेल मद् में अल्प धनराशि प्रदान करने के कारण खेलों का स्तर निरंतर गिर रहा है। इसके परिणामस्वरुप ग्रामीण बच्चों को स्कूली स्तर पर खेलों के लिए बुनियादी सुविधायें प्राप्त नहीं हो पाती। भारत में प्राईमरी स्तर पर ना ही कुशल खेल अध्यापक है ना ही बच्चों के मनपसन्द खेलों के लिये कोई कोचिंग अथवा ट्रेनिंग प्रदान की जाती है। भारत के ग्रामीण जनमानस की सोच है कि लड़कियों को घर में रखना चाहिए एवं स्कूली शिक्षा केवल लड़कों के लिये है ऐसे में आप सोच सकते हैं कि हमारे देश की समाजिक कुरीतियाँ, घिसी–पिटी परम्पराओं के कारण खेल हमारे देश में कैसे आगे बढ़ सकता है। जब हमारे बच्चे प्राथमिक, बेसिक एवं माध्यमिक शिक्षा को पास कर के कॉलेज स्तर पर शिक्षा प्राप्त करते हैं, वहाँ भी खेलों के लिए सुविधाओं का अभाव है। सरकार बहुत ही अल्प बजट खेलों के मद् में खर्च करती है। कालेजों में भी कुशल खेल अध्यापक, ट्रेनर एवं कोचों

का अभाव है। जिससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे देश के लड़के–लड़कियां खेलों के उच्च स्तर को कैसे प्राप्त कर सकते हैं। अगर देश के लड़के–लडकियों को बचपन से ही बेहतर खेल सुविधायें मिले तो हमारे यहाँ की युवा पीढ़ी भी विश्वस्तर पर ओलंपिक, एशियाड एवं राष्ट्रमण्डल खेलों में देश का नाम रोशन कर सकती है। आज भारत 21वीं शताब्दी में बढ़ रहा है एवं पुरानी सोच को बदलने तथा नई सोच को अपनाने की आवश्कता है। यदि खेलों में भारत को विश्व शक्ति बनना है तो लड़के एवं लड़कियों के भेद को समाप्त कर नये समाज का निर्माण करना होगा तभी ओलम्पिक स्तर पर भारत मेडल प्राप्त कर सकता है। बेटियां हमारे राष्ट्र की धरोहर हैं और उन्होंने सिद्ध कर दिया है कि खेलों एवं राष्ट्र के निर्माण में उनका शत प्रतिशत योगदान है।

भारत में महिलाओं ने सन् 1924 में पहली बार ओलंपिक में भाग लिया। रियो ओलंपिक तक मात्र पाँच महिलाओं ने ओलंपिक मेडल जीते हैं। पदक विजेता महिलाओं का विवरण दिया जा रहा है:

1. कर्णम मल्लेश्वरी– भारोत्तोलन वर्ष 2000– सिडनी
2. मैरी कॉम – मुक्केबाजी वर्ष 2012– लंदन
3. साइना नेहवाल – बैडमिंटन वर्ष 2012– लंदन
4. साक्षी मलिक – कुश्ती वर्ष 2016 – रियो
5. पी वी सिंधु – बैडमिंटन वर्ष 2016– रियो

उक्त विवरण से स्पष्ट है कि बुनियादी सुविधायें, कोचिंग एवं ट्रेनिग के अभाव में महिलाओं की खेलों में उचित भागीदारी नहीं हो पायी है। अन्यथा हमारे देश की महिलायें पदकों की संख्या में बढ़ोत्तरी कर सकती थीं। वर्ष 2016 में हुए रियो ओलंपिक में साक्षी मलिक ने 58 किलो ग्राम वर्ग की कुश्ती स्पर्धा में कांस्य पदक जीता एवं पी वी सिंधु ने बैडमिंटन स्पर्धा में रजत पदक जीतते हुए देश के मान की रक्षा की एवं पोडियम पर देश का झंडा लहराया। महिलाओं ने साबित किया कि अगर आप बेटियों की भ्रूण हत्या नहीं करेंगे तो क्या कुछ हांसिल किया जा सकता है।

भारत की विशाल जनसंख्या को देखते हुए ओलंपिक में भारत की दयनीय स्थिति इस बात को प्रमाणित करती है कि हमारे देश में खेल आम आदमी तक नहीं पहुँचा है। खेलों में जब भी खिलाड़ियों का प्रदर्शन खराब होता है तो सिस्टम को दोष देते है परन्तु वे सिस्टम को दोष देकर पूर्णतया बरी नहीं हो सकते, क्योंकि खिलाड़ियों में जिस त्याग, समर्पण एवं जजबे की आवश्यकता है उसका खिलाड़ियों में अभाव है। खेलों में क्षेत्रवाद, धर्मवाद, जातिवाद एवं नस्लवाद की राजनीति काफी लम्बे समय से विधमान है जिसके कारण अच्छे खिलाड़ी तमाम

गुण सम्पन्न होने के बावजूद भी राष्ट्रीय एंव अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली स्पर्धाओं के लिए चुने नहीं जाते, जिसके कारण उनका खेल जीवन समाप्त हो जाता है। भारत में आज खेल अकादमी, खेल हॉस्टल एवं कुशल देशी व विदेशी कोचों की सख्त आवश्यकता है जो खेल प्रतिभाओं को खोजकर संवारे एवं उन्हें ओलंपिक में मेडल पाने लायक बनाये। खेल मंत्रालय ने इस दिशा में काम करना प्रारम्भ कर दिया है एवं वर्ष 2015 में टार्गेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम लॉच की है, जिसमें देश भर के प्रतिभावान एथलीटों को देश एवं विदेशों में ट्रेनिंग दी जा रही है। इसमें सरकार ने लगभग 180 करोड़ रुपये खर्च किये हैं जो अभी ब्रिटेन, चीन एवं अमेरिका जैसे देशों की तुलना में बहुत कम है। ब्रिटेन अपने एक एथलीट को तैयार करने में लगभग 41 करोड़ रुपये खर्च करता है जबकि भारत एक एथलीट पर अधिकतम 2 करोड़ रुपये खर्च करता है तो आप कल्पना कर सकते हैं कि देश के खिलाड़ी बजट एवं सुख–सुविधाओं के अभाव में शर्तिया मेडल कैसे ला सकते हैं। भारत जैसे विकासशील देशों को खेलों का बजट बढ़ाना होगा जिसके लिये निजी स्तर पर, कार्पोरेट जगत से एवं पी0 पी0 पी0 मोड के माध्यम से लोगों को आगे बढ़कर खिलाड़ियों को प्रायोजित करना पड़ेगा तभी भारत में खिलाड़ी मेडल ला सकते हैं एवं देश में खेलों के गिरते स्तर को संभाला जा सकता है। रियो में भारत का 67वां स्थान है जबकि लंदन में भारत 55वें स्थान पर था। इससे स्पष्ट होता है कि देश में मजबूत ढाँचे के अभाव में खेलों का स्तर नहीं बढ़ पाया है। अगर सरकार खेलों पर गंभीर फैसले ले तो भारत भी विश्व के सर्वश्रेष्ठ 25 देशों में शामिल हो सकता है।

हिन्दी जानने वाला आदमी सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा कर सकता है और उसे हर जगह हिन्दी बोलने वाले मनुष्य मिल सकते हैं। हिन्दी सीखने का कार्य एक ऐसा त्याग है जिसे दक्षिण भारत के निवासियों को, राष्ट्र की एकता के हित में करना चाहिए।

– एनी बेसेन्ट

उत्तराखण्ड के जंगलों में आग : एक आपदा

लक्ष्मण सिंह,
लेखापरीक्षक

उत्तराखण्ड राज्य का लगभग 65 प्रतिशत क्षेत्रफल खूबसूरत वनों से आच्छादित है। इन वनों पर आश्रित वन्य जीवों के साथ–साथ बहुमूल्य वनस्पतियाँ वन सम्पदा में महत्वपूर्ण इजाफा करती हैं। वन संपदा राज्य की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। साथ–साथ ये वन आस–पास रहने वाले ग्रामवासियों के दैनिक जीवन का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।

वर्ष 2016, उत्तराखण्ड के जंगलों के लिए एक बड़ी आपदा वाला वर्ष रहा है। वैसे तो जंगलों में आग की यह पहली घटना नहीं है। वर्ष 1992, 1997, 2004 एवं 2012 में भी उत्तराखण्ड के जंगल इस तरह की आपदा से गुजर चुके हैं। परंतु वर्ष 2016 में उत्तराखण्ड के जंगलों की आग ने देश के साथ–साथ विदेशों का भी ध्यान आकर्षित किया है। इस वर्ष उत्तराखण्ड में जंगलों में आग की लगभग 1800 घटनाएं प्रकाश में आयीं जिससे लगभग 4000 हेक्टेयर वन क्षेत्र आग की भेंट चढ़ गए। सभी 13 जिलों में वनाग्नि की घटनाएं प्रकाश में आयीं।

वनों में आग की विकरालता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इससे निपटने के लिए राज्य एवं केंद्र सरकार द्वारा अनेक उपाय किए गए। वन विभाग, भारतीय सेना, वायु सेना एवं राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन की टीमों द्वारा इससे निपटने के लिए एकल/ सामूहिक अभियान चलाये गए। वायु सेना द्वारा एम आई–17 एयरक्राफ्ट का भी इस्तेमाल किया गया।

जंगलों में लगने वाली इस आग के कई कारण हैं। जिसमें सूखा मौसम, तेज गर्मी, तेज हवाओं का चलना एवं सरकार द्वारा समय पर योजना तैयार न किया जाना आदि हैं। सामान्यतया पतझड़/शीतकाल में गिरने वाले पत्तों के सूखने के उपरांत आग लगती है। पिछले वर्ष शीतकाल में वर्षा न होने के कारण जमीन पर नमी नहीं थी। वर्षा न होने के कारण मार्च से ही तापमान काफी बढ़ गया था, जिससे कि छोटी–छोटी आग ने भी विकराल रूप ले लिया।

वन विभाग के अनुसार 'फायर सीजन' आमतौर पर 15 फरवरी से 15 जून तक होता है। इस आपदा से बचने के लिए वन विभाग को 4–5 महीने पहले से ही तैयारी करनी चाहिए थी परंतु इस बार की स्थिति से प्रतीत होता है कि विभाग की तैयारी ना–काफी थी। इसके लिए विभाग द्वारा कोई मास्टर प्लान तैयार नहीं किया गया था न ही पारंपरिक 'फायर लाइन' का

रख–रखाव किया गया, जिससे इस आपदा से निपटने में वन विभाग का तंत्र निष्क्रिय साबित हुआ।

जंगलों की आग से पर्यावरण को काफी क्षति पहुँचती है, इससे स्थानीय मौसम पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। आग से वन सम्पदा, वन्य जीवों एवं आयुर्वेदिक वनस्पति को भी अपूर्णीय क्षति होती है। आग से बचने के लिए वन्य जीव भी जंगलों से रिहायसी क्षेत्रों में घुस जाते है जिससे फसलों एवं आम जन–मानस को नुकसान पहुंचाते हैं।

इन घटनाओं की पुनरावृत्ति से बचने के लिए विभाग को मास्टर प्लान तैयार करने की आवश्यकता है। जिसमें जंगलों के आस–पास बसे गाँव के निवासियों की भी भागीदारी की जा सकती है। पहले लोगों की जंगलों पर निर्भरता अधिक थी, जिससे लोग छोटी–छोटी आग को विकराल होने से पहले खुद ही बुझाने का प्रयास करते थे। पलायन के कारण गावों में लोगों की संख्या भी काफी कम हो गयी है, साथ ही लोगों का जंगलों से लगाव भी कम हो गया है। इन लोगों की भागीदारी के लिए आवश्यक है कि उनके निजी स्वार्थों को जंगलों के साथ जोड़ना पड़ेगा। स्थानीय लोगों को 'फायर सीजन' के लिए वनों की आग बुझाने का आवश्यक प्रशिक्षण प्रदान कर सामयिक रोजगार प्रदान किया जा सकता है। सूखी पत्तियों से खाद बनाने के लिए प्रेरित करना चाहिए, जिससे रोजगार के साधन बढ़ सकते हैं।

आकाश की तरफ देखिये। हम अकेले नहीं हैं। सारा ब्रह्माण्ड हमारे लिए अनुकूल है और जो सपने देखते हैं और मेहनत करते हैं, उन्हें प्रतिफल देने की साजिश करता है।

– अब्दुल कलाम

भारतवर्ष का धर्म उसके पुत्रों से नहीं, सुपुत्रियों के प्रताप से ही स्थिर है। भारतीय देवियों ने यदि अपना धर्म छोड़ दिया होता तो देश कबका नष्ट हो चुका होता।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

अधरंगे विचार

हेमलता,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

विचारों के समन्दर में डूबती उतरती
अक्सर सोचती हूँ मैं,
कि यूँ ही बढ़ती चलूँ या फिर रुक जाऊँ
थोड़ी देर को और सुन लूँ.....
उन अनगिनत पीछा करती आवाजों को
जो दौड़ रही हैं रोकने को मुझे!
और लगाना चाह रही हैं बंदिशें
इस तरह मेरी स्वच्छन्द उड़ान पर।।
वो आवाजें..... जो अक्सर उठती हैं और
भौंहे सिकोड़ती हैं यूँ ही
मेरे अलग से, अटपटे से, नये से विचारों पर।
जो पीठ पीछे अपना रही हैं मेरे ही रास्ते
पर मुझे दिखाती रही हैं बेरुखी और अंधेरे का खौफ।
वो अनगिनत आवाजें..... जो दबाना चाहती हैं
मेरी खिलखिलाहट को, मायूसियों और अवसादों में
और कर रही हैं कोशिशें कि मेरा दायरा
सिमट कर रहे मेरे ही आँचल के छोर तक।
अक्सर देखा है मैंने और महसूस भी किया है
इस सदी में जीने वाली रंगी–पुती कठपुतलियाँ
चाहती हैं कि मैं भी बनूँ कठपुतली, मगर उस सदी की।.
जाने किस हिसाब से.....
उनके रंग उन्हें आगे और मुझे पीछे धकेलते हैं

कभी रिवाजों, कभी अदब और कभी लिहाजों की बेड़ियों से।
पर सच तो यह भी है कि
रिवाज तोड़ते नहीं, अवसाद नहीं देते
उल्लास–उमंग–उत्साह देते हैं
और आगे बढ़ती हैं वो आवाजें मुझे दबाने को
बनाकर बहाना मेरी नियति को
पर मैं बढ़ जाती हूँ आगे यही मानकर.....
आखिर नियति भी हमीं ही तो हैं
झुकाकर तोड़ ही दिया होगा किसी अभिमानी आवाज ने।

है आस, होंगे सफल

हरीश कुमार,
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पाना है लक्ष्य है मन अटल, है आस होंगे सफल।
है आज जो वक्त, न होगा कल।
है साहस तो हर बाधा हो विफल।
हार, निराशा होगी दो पल, इन बाधाओं को तोड़कर जो गया निकल।
करके परिश्रम जिसने किया है पथ सरल।
करके बुलंद हौंसले, करके हृदय अचल।
जल कर आग में भी जो रहा शीतल।
वहीं काँटो भरी राह को कर देगा निर्मल।
वही सुख के अमृत से भीगेगा कल।
तो कर विश्वास और हो जा अचल।
है विहन क्या, सफलता के होंगे तेरे कल।
पाना है लक्ष्य है मन अटल, है आस होंगे सफल।

हौसला बनाम परिस्थिति

योगेश त्यागी,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रत्येक खिलाड़ी का बस एक ही सपना होता है कि वह ओलम्पिक में खेले, और भारतीय खिलाड़ी भी इससे अछूते नहीं है। परन्तु विकसित देशों के खिलाड़ी जिन व्यवस्थाओं एवं सहूलियतों में अभ्यास करते हैं उसकी तुलना में यदि भारत में देखें तो आँखें खुली रह जाती हैं। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र में अधिकतर खिलाड़ी मध्यम, निम्न मध्यम अथवा गरीब परिवार से आते हैं तो जाहिर है कि अपने को शारीरिक तौर पर पुष्ट रखने के लिए संतुलित आहार लेना ही मुश्किल होता है, अभ्यास तो छोड़ ही दीजिये। दूसरा, जिन परिस्थितियों एवं व्यवस्था में वे अभ्यास करते हैं, वह दयनीय है। ऊपर से कुछ लोग उनका साहस बढ़ाना तो दूर, उनका मखौल उड़ाते हैं, जिससे उनका मनोबल गिरता है। यहाँ तक कि संचालन समिति की तीखी प्रतिक्रिया भी झेलनी पड़ती है। हमारे देश के खिलाड़ियों में हौसले की कमी नहीं है, बस जरूरत है तो जो इन्हें सहूलियत देने की, उन्हें दुरुस्त करने की। व्यवस्था में सुधार हो और कोई भी ऐसा काम न हो जिससे खिलाड़ियों का मनोबल कम हो। क्योंकि सच में, ओलंपिक तो बहुत दूर की बात है, राष्ट्रीय स्तर तक पहुँच पाने में ही बहुत परिश्रम करना पड़ता है। खेल के तो देखो। ओलंपिक के लिए सिर्फ अर्हता प्राप्त करना ही बहुत बड़ी महाभारत है। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी देश के ये खिलाड़ी अपना शत–प्रतिशत लगा देते हैं और देश को मेडल दिलाकर गौरवान्वित करते हैं। जैसे कि देश की बेटी पी०वी० सिंधु और साक्षी मलिक ने ओलम्पिक 2016 में पदक जीतकर किया। हमें इन खिलाड़ियों पर गर्व है।

यह लेख देश के सभी खिलाड़ियों को समर्पित है।

जय हिन्द!

संघर्ष

अलका रानी,
आशुलिपिक

हमारा इम्तेहान लेने के लिए जिंदगी में कभी जीत की खुशियाँ अति हैं, तो कभी गम मिलते हैं। यह हम पर निर्भर है कि उनका सामना कैसे करें। जीत कोशिश किए बिना नहीं मिलती।

जीव विज्ञान के एक अध्यापक अपने छात्रों को पढ़ा रहे थे कि 'सूँडी तितली में कैसे बदल जाती है'। उन्होंने छात्रों को बताया कि कुछ ही घंटों में तितली अपने खोल से बाहर निकलने की कोशिश करेगी। उन्होंने छात्रों को आगाह किया कि वे खोल से बाहर निकलने में तितली की मदद न करें। इतना कह कर वह कक्षा से बाहर चले गए।

छात्र इंतजार करते रहे। तितली खोल से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगी। एक छात्र को उस पर दया आ गई। अपने अध्यापक की सलाह न मानकर उसने खोल से बाहर निकलने की कोशिश कर रही तितली की मदद करने का फैसला किया। उसने खोल को तोड़ दिया, जिसकी वजह से तितली को बाहर निकलने के लिए और मेहनत नहीं करनी पड़ी। लेकिन वह थोड़ी देर में मर गई।

वापस लौटने पर शिक्षक को सारी घटना मालूम हुई। तब उन्होंने छात्रों को बताया कि खोल से बाहर आने के लिए तितली को जो संघर्ष करना पड़ता है, उसी वजह से उनके पंखों को मजबूती और शक्ति मिलती है। यही प्रकृति का नियम है। तितली की मदद करके छात्र ने उसे संघर्ष करने का मौका नहीं दिया। नतीजा यह युआ कि वह मर गई।

इतिहास बताता है कि बड़े–बड़े विजेताओं को भी जीत से पहले हताश कर देने वाली बाढ़ों का सामना करना पड़ा। उन्हें जीत इसलिए मिली कि वे अपनी असफलताओं से मायूस नहीं हुए। इसलिए हमें भी अपनी जिंदगी पर यही उसूल लागू करना चाहिए। जिंदगी में कोई भी कीमती चीज बिना संघर्ष के नहीं मिलती। कुछ माँ–बाप अपने बच्चों को सफलता हांसिल करने के लिए संघर्ष का मौका नहीं देते। इस तरह वे जिन्हें सबसे अधिक चाहते हैं उन्हीं को नुकसान पहुँचा बैठते हैं।

सिर्फ जिंदगी न गुजारो – जीओ
सिर्फ छुओ नहीं – महसूस करो
सिर्फ देखो नहीं – गौर करो
सिर्फ पढ़ो नहीं – जीवन में उतारो
सिर्फ सुनो नहीं – ध्यान से सुनो
सिर्फ ध्यान से ही न सुनो – समझो।।

माँ की इच्छा

रेनू,
डी.ई.ओ.

महीने बीत जाते हैं,
साल गुजर जाता है,
वृद्धाश्रम की सीढ़ियों पर,
मैं तेरी राह देखती हूँ।

आँचल भीग जाता है,
मन खाली–खाली रहता है,
तू कभी नहीं आता,
तेरा मनी ऑर्डर आता है।
इस बार पैसे न भेज,
तू खुद आ जा,
बेटा मुझे अपने साथ,
अपने घर लेकर जा।

तेरे पापा थे जब तक,
समय ठीक रहा कटते,
खुली आँखों से चले गए,
तुझे याद करते–करते।

अंत तक तुझको हर दिन,
बढ़िया बेटा कहते थे,
तेरे साहबपन का,
गुमान बहुत वो करते थे।
मेरे हृदय में अपनी फोटो,
आकर तू देख जा,
बेटा मुझे अपने साथ,
अपने घर लेकर जा।

अकाल के समय
जन्म तेरा हुआ था,
तेरे दूध के लिए,
हमने चाय पीना छोड़ा था।

वर्षों तक एक कपड़े को,
धो–धो कर पहना हमने,
पापा ने चिथड़े पहने,
पर तुझे स्कूल भेजा हमने।
चाहे तो ये सारी बातें
आसानी से तू भूल जा,
बेटा मुझे अपने साथ,
अपने घर लेकर जा।

घर के बर्तन मैं माजूँगी
झाड़ू पोछा मैं करूँगी,
खाना दोनों वक्त का
सबके लिए बना दूँगी।

नाती, नातिन की देखभाल,
अच्छी तरह करूँगी मैं,
घबरा मत, उनकी दादी हूँ,
ऐसा नहीं कहूँगी मैं।
तेरे घर की नौकरानी
ही समझ मुझे ले जा,
बेटा मुझे अपने साथ
अपने घर लेकर जा।

आँखें मेरी थक गईं,
प्राण अधर में अटका है,
तेरे बिना जीवन जीना,
अब मुश्किल लगता है।

कैसे मैं तुझे भुला दूँ,
तुझसे तो मैं माँ हुई,
बता ए मेरे कुलभूषण,
अनाथ मैं कैसे हुई?

अब आ जा तू,
एक बार तो माँ कह जा,
हो सके तो जाते–जाते,
वृद्धाश्रम गिराता जा

बेटा मुझे अपने साथ
अपने घर लेकर जा।

भाग्यवादी नजरिया

अलका रानी,
आशुलिपिक

एक कस्बे में बाढ़ आई। एक आदमी के सिवा वहाँ रहने वाला हर आदमी किसी सुरक्षित स्थान पर जा रहा था। जिस आदमी ने अपनी जगह नहीं छोड़ी, उसका कहना था, "मुझे विश्वास है कि भगवान मेरी मदद करेगा।" पानी का स्तर बढ़ने पर उसे बचाने के लिए एक जीप आई। पर उस आदमी ने यह कहकर जाने से मना कर दिया कि "मुझे विश्वास है कि भगवान मेरी रक्षा करेगा।" पानी का स्तर ओर बढ़ने पर वह अपने मकान की दूसरी मंजिल पर चला गया। तब उसकी मदद करने के लिए एक नाव आई। उस आदमी ने उसके साथ भी यही कह कर जाने से मना कर दिया कि "मुझे विश्वास है कि भगवान मेरी रक्षा करेगा।" पानी का स्तर बढ़ता जा रहा था। वह आदमी अपने मकान की छत पर चला गया। उसकी मदद के लिए हेलीकॉप्टर आया लेकिन उस आदमी ने अपनी बात फिर से दोहरायी। आखिरकार वह डूब कर मर गया। भगवान के पास पहुँचने पर उसने गुस्से में सवाल किया, "मुझे आप पर पूरा विश्वास था, फिर आपने मेरी प्रार्थनाओं को अनसुना कर मुझे डूबने क्यों दिया? भगवान ने जवाब दिया, तुम क्या सोचते हो – तुम्हारे पास जीप, नाव और हेलीकॉप्टर किसने भेजा था?"

भाग्यवादी नजरिए से उभरने का केवल एक ही तरीका है कि हम जिम्मेदारियाँ कबूल करें और किस्मत पर यकीन करने के बजाए "वजह" और "नतीजे" के सिद्धांत में विश्वास करें। जिंदगी में कोई लक्ष्य इंतजार, चाहत और अचंभित होकर सोच–विचार करते रहने से नहीं, बल्कि काम, तैयारी और योजना से हासिल होता है।

भाग्य उनकी मदद करता है, जो अपनी मदद करते हैं।

भाग्य

उसने सारा दिन काम किया
और सारी रात काम किया
उसने खेलना छोड़ा
और मौज–मस्ती छोड़ी
उसने ज्ञान के ग्रंथ पढ़े
और नई बातें सीखीं

वह आगे बढ़ता गया
पाने के लिए सफलता जरा सी
दिल में विश्वास और हिम्मत लिए
वह आगे बढ़ा
और जब वह सफल हुआ
लोगों ने उसे 'भाग्यशाली' कहा।

बहाने (EXCUSES) बनाम (VS) सफलता (SUCCESS)

अलका रानी,
आशुलिपिक

- बहाना 1 : मेरे पास धन नहीं.....
  जवाब : इनफोसिस के पूर्व चेयरमैन नारायणमूर्ति के पास भी धन नहीं था, उन्हें अपनी पत्नी के गहने बेचने पड़े.....
- बहाना 2 : मुझे बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी.....
- जवाब : लता मंगेशकर को भी बचपन से परिवार की जिम्मेदारी उठानी पड़ी थी....
- बहाना 3 : मैं अत्यंत गरीब घर से हूँ...
  जवाब : पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम भी गरीब घर से थे.....
- बहाना 4 : बचपन में ही मेरे पिता का देहांत हो गया था.....
  जवाब : प्रख्यात संगीतकार ए.आर.रहमान के पिता का भी देहांत बचपन में ही हो गया था....
- बहाना 5 : मुझे उचित शिक्षा लेने का अवसर नहीं मिला.....
  जवाब : उचित शिक्षा का अवसर फोर्ड मोटर्स के मालिक हेनरी फोर्ड को भी नही मिला....
- बहाना 6 : मेरी उम्र बहुत ज्यादा है.....
  जवाब : विश्व प्रसिद्ध केंटुकी फ्राइड चिकेन के मालिक ने 60 साल की उम्र में पहला रेस्तरा खोला था...
- बहाना 7 : मेरी लंबाई कम है....
  जवाब : सचिन तेंदुलकर की भी लंबाई कम है....

- बहाना 8 : बचपन से ही अस्वस्थ हूँ.....
  जवाब : ऑस्कर विजेता अभिनेत्री मरली मेटलिन भी बचपन से बहरी व अस्वस्थ थी....
- बहाना 9 : मैं इतनी बार हार चूका, अब हिम्मत नहीं.....
  जवाब : अब्राहम लिंकन 15 बार चुनाव हारने के बाद राष्ट्रपति बने.....
- बहाना 10 : एक दुर्घटना में अपाहिज होने से मेरी हिम्मत चली गयी.....
  जवाब : प्रख्यात नृत्यांगना सुधा चन्द्रन के पैर नकली हैं....
- बहाना 11 : मुझे ढेरों बीमारिया हैं....
  जवाब : वर्जिन एंयरलांइन के प्रमुख को भी अनेक बीमारियाँ थीं, राष्ट्रपति रूजवेल्ट के दोनों पैर काम नहीं करते थे....
- बहाना 12 : मैंने साइकिल पर घूमकर आधी जिंदगी गुजारी है..
  जवाब : निरमा के करसन भाई पटेल ने भी साइकिल पर निरमा बेचकर आधी जिंदगी गुजारी....
- बहाना 13 : मुझे बचपन से मंद बुद्धि कहा जाता है...
  जवाब : थामस अल्वा एडीसन को भी बचपन से मंदबुद्धि कहा जाता है....
- बहाना 14 : मैं एक छोटी सी नौकरी करता हूँ, इससे क्या होगा....
  जवाब : धीरु अंबानी भी छोटी नौकरी करते थे....
- बहाना 15 : मेरी कम्पनी एक बार दिवालिया हो चुकी है, अब मुझ पर कौन भरोसा करेगा....
  जवाब : दुनिया की सबसे बड़ी शीतल पेय निर्माता पेप्सी कोला भी दो बार दिवालिया हो चुकी है...
- बहाना 16 : मेरा दो बार नर्वस ब्रेकडाउन हो चुका है, अब क्या कर पाऊँगा...
  जवाब : डिज्नीलैंड बनाने के पहले वाल्ट डिज्नी का तीन बार नर्वस ब्रैकडाउन हुआ था...
- बहाना 17 : मेरे पास बहुमूल्य आइडिया है पर लोग अस्वीकार कर देते है....
  जवाब : जेरॉक्स फोटो कॉपी मशीन के आईडिया को भी ढेरों कंपनियों ने अस्वीकार किया था, लेकिन आज परिणाम सबके सामने है....

भारतीय शिक्षा के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ

राजभाषा प्रतियोगिता 2015 (प्रथम पुरस्कार)

श्री गोविन्द सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

शिक्षा संस्कृति की वाहक है, और संस्कृति ही वह तत्व है जो कि मानव समुदाय को पशुओं से पृथक करती है। इस प्रकार, यह माना जा सकता है कि शिक्षा ही सभ्य मानव जीवन का आधार है। शिक्षा का महत्व इतना अधिक होने के कारण ही शिक्षक को ईश्वर से भी ऊपर महत्व प्रदान किया है जैसा कि निम्नलिखित दोहे से प्रकट है:

गुरू गोविन्द दोनों खड़े, काके लागे पाँय।
बलिहारी, गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।

प्राचीन समाज में शिक्षा एक सेवा–कार्य थी। वर्तमान में शिक्षा देने और शिक्षा लेने, दोनों के ही मायने बदल चुके हैं। शिक्षा का उद्ददेश्य, शिक्षा देने का तरीका, शिक्षकों व शिक्षार्थियों का शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण आदि सभी कुछ बदल गया हैं। इस बदलाव के कारण ही अनेक चुनौतियाँ शिक्षा के समक्ष मुँह–बाये खड़ी हैं जिनसे निपटना भारतीय समाज के लिए अति आवश्यक है।

शिक्षा के समक्ष उपस्थित चुनौतियों में सर्वप्रथम तो शिक्षा का सार्वभौमीकरण न हो पाने की है। अभी भी देश की जनसंख्या का एक बड़ा भाग, विशेषकर गाँवो में निवास करने वाले लोग, निरक्षर हैं। एक बड़ा तबका साक्षर जरूर हुआ है परंतु ये लोग भी केवल साक्षर है, शिक्षित नहीं। अतः शिक्षा का सार्वभौमीकरण शीध्रतिशीध्र आवश्यक है।

शिक्षा के क्षेत्र में एक बड़ी समस्या सरकारी स्कूलों व पब्लिक स्कूलों के मध्य शिक्षा के स्तर का अन्तर भी है। पब्लिक स्कूल ज्यादा पैसा लेते हैं, और ज्यादा अच्छी शिक्षा देते हैं। दूसरी तरफ, सरकारी स्कूल गरीबों के बच्चों के पढ़ने के लिए हैं। यह गरीब बच्चे भी शिक्षा को बीच में ही छोड़कर काम में लग जाते हैं और उनकी शिक्षा वहीं पर ठप हो जाती है। आज जरूरत इस बात की है कि सरकारी स्कूलों की शिक्षा का स्तर भी ऊपर उठाया जाये और इनमें पढ़ने वाले बच्चों के स्कूल छोड़ने की दर को कम करने का प्रयास किया जाए।

शिक्षा की एक अन्य बड़ी चुनौती भारत में शिक्षा का रोजगार में पूर्णतया सहायक न हो पाना है। हमारे कितने स्नातक, परास्नातक विद्यार्थी अपने परिवार के लिए दो जून की रोटी

नहीं कमा पा रहे हैं। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो कि व्यक्ति को जीवन–यापन के योग्य बना सके। यह आज की शिक्षा की 'परीक्षा' (Test) है।

अगर शिक्षा सभ्य न बनाये, तो वह अपने उद्देश्य में असफल हो जाती है। यह हमारी शिक्षा की सबसे बड़ी चुनौती है कि 'हमारी शिक्षा का नैतिक मूल्यों से नाता टूट चुका है।' इसीलिए अपराध इतने अधिक बढ़ रहे हैं और सामाजिक सद्भावना, पारिवारिक प्रेम इत्यादि समाप्त हो रहा हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियों में शिक्षा का सार्वभौमीकरण न हो पाना, सरकारी स्कूलों की शिक्षा का सार्वभौमीकरण न हो पाना, सरकारी स्कूलों की शिक्षा का पब्लिक स्कूलों की शिक्षा की तुलना में पिछड़ा होना, स्कूल छोड़ने की प्रवृत्ति का कम न होना, शिक्षा का रोजगार में सहायक न होना और शिक्षा में नैतिक मूल्यों का समावेश न होना है। इन चुनौतियों को समाप्त करने के पश्चात ही शिक्षा अपने उद्देश्य में सफल होकर सभ्यता व संस्कृति की वाहक बन सकती है।

जय हिन्द।

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।

– कमलापति त्रिपाठी

हिन्दी के बिना हिन्दुस्तान अपने गौरव को प्राप्त नहीं कर सकता।

– राजर्षि पुरूषोत्तम दास टंडन

सतर्कता जागरुकता

सतर्कता जागरूकता प्रतियोगिता 2015 (प्रथम पुरस्कार)

श्री गोविन्द सिंह,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारत विश्व का सबसे बड़ा प्रजातंत्र (लोकतंत्र) है तथा इसका संविधान विश्व के महानतम संविधानों में से एक है, जिसमें शासन–प्रशासन से संबंधित सभी विषयों का सम्यक प्रावधान किया गया है। उक्त प्रावधानों के लिखित रूप में उपलब्ध होने के कारण ऐसा समझा जा सकता है कि हमारे देश में भ्रष्टाचार की संभावना न्यूनतम होगी (क्योंकि प्रत्येक कार्य लिखित नियमों के अनुसार संचालित किया जाता है), परंतु वास्तविकता इसके पूर्णतः विपरीत है। वास्तव में, हमारे देश के अखबार तथा अन्य समाचार माध्यम भ्रष्टाचार की खबरों से प्रतिदिन पटे पड़े रहते हैं और 'कम भ्रष्टाचार वाले देशों की सूची' में हमारा स्थान वर्तमान में 82 वाँ है। अतः कोई भी बाहरी व्यक्ति सहज अंदाजा लगा रहता है कि भ्रष्टाचार हमारी संस्कृति में 'स्वीकार्यता' के स्तर तक पहुँच गया है।

किसी विद्वान ने कहा है कि "भ्रष्टाचार प्राधिकार तथा एकाधिकार का योग है जिसमें पारदर्शिता का अभाव होता है।" वास्तव में भ्रष्टाचार वही लोग कर सकते हैं जो किसी प्राधिकार के पद पर आसीन हैं तथा एकाधिकार के कारण पीड़ित व्यक्ति को राहत देने का एकमात्र माध्यम है। ऐसे में पीड़ित व्यक्ति को अपेक्षित सेवा पाने के लिए, जिसका कि वह कानूनी रूप से हकदार है, भ्रष्टाचारी प्राधिकारी को किस न किसी रूप में संतुष्ट करना पड़ता है। यह भ्रष्टाचार का वह प्रकार है जिसे 'उत्पीड़क भ्रष्टाचार' कहते हैं तथा जिसमें भ्रष्टाचारी अधिकारी 'सही काम करने के भी पैसे लेता है।' भ्रष्टाचार का एक दूसरा रूप भी होता है जो कि संख्या में कम परंतु पैमाने में ज्यादा होता है। इसे 'कपटपूर्ण भ्रष्टाचार' कहते हैं। इसके अंतर्गत कोई पक्ष सक्षम प्राधिकारी को कोई ऐसा काम करने के लिए प्रेरित करता है जो कि उस पक्ष को फायदा पहुँचाये, हालांकि वह पक्ष उस फायदे के लिए कतई योग्य (eligible) नहीं होता है तथा इस काम में किसी अन्य पक्ष को प्रायः कोई दृश्य (visible) नुकसान भी नहीं होता है। उक्त फायदा पहुँचाने के बदले में फायदा पहुँचाने वाले प्राधिकारी को 'उपयुक्त लाभ' से नवाजा जाता है। टू–जी घोटाला व कोयला घोटाला इसी का उदाहरण है।

भ्रष्टाचार के इन दोनों रूपों से निपटने के लिए दण्डात्मक व्यवस्था की गई है। लेकिन कानून व्यवस्था की अपनी खामियाँ हैं। अत्यधिक मुकदमों का बोझ, न्यायाधीशों की कम संख्या,

गवाहों की सांठ–गाठ इत्यादि के कारण दोषियों को सजा देने की दर काफी कम है। जिन्हें सजा मिल भी जाये वे ऊँची अदालतों का दरवाजा खटखटाते हैं और जब तक अंतिम फैसला आये तब तक अधिकतर अपराधी प्राकृतिक मृत्यु प्राप्त कर चुके होते हैं तथा उनके द्वारा पैदा किए भ्रष्टाचार के धन से उनकी पीढ़ियाँ मौज करती हैं।

इसी समस्या से निपटने के लिए वर्तमान में भ्रष्टाचार निरोधी रणनीति बदली जा रही है। अब दण्डात्मक उपायों के साथ–साथ 'निवारक सतर्कता' पर जोर दिया जा रहा है। उक्त निवारक सतर्कता के अंतर्गत जनता को तथा सरकारी अधिकारियों को भ्रष्टाचार के सभी पहलुओं के प्रति जागरूक किया जाता है ताकि वे जाने–अनजाने में कही भ्रष्ट आचरण का हिस्सा न बन जायें। इसके साथ ही, तंत्र (System) में ऐसे सुधार किये जाते हैं जिससे कि कोई चाहकर भी भ्रष्टाचार न कर सके तथा भ्रष्टाचार का संभावित क्षेत्र (Scope) घटाकर शून्य कर दिया जाये। इन सतर्कता जागरूकता उपायों के अंतर्गत जटिल कानूनों का सरलीकरण, विवेकाधिकार की समाप्ति, प्रत्येक स्तर पर उत्तरदायित्व का निर्धारण, समयबद्ध रूप से निर्णय लेना अनिवार्य किया जाना, सूचना के अधिकार का क्रियान्वयन तथा भ्रष्टाचार उजागर करने वालों का संरक्षण (Protection of whistleblowers) शामिल हैं। उक्त सतर्कता जागरूकता उपाय भ्रष्टाचार का इलाज तो नहीं हैं लेकिन यह भ्रष्टाचार की रोकथाम में अत्यधिक कारगर हैं और किसी विद्वान ने तो कहा ही है कि "Prevention is better than cure"। अतः यह आशा की जा सकती है कि सतर्कता–जागरूकता के उपाय एक ऐसी लोक संस्कृति विकसित करने में सहायक सिद्द होंगे जिसमें भ्रटाचार अस्वीकार्य होगा तथा भ्रष्टाचार में संलिप्त होने की संभाव्यता घटकर शून्य रह जायेगी।

जय हिन्द।

वर्ष 2015–16 के दौरान सरकारी काम–काज हिन्दी में करने के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित कार्मिकों के नाम

1. श्री रवि प्रकाश सिंह यादव, लेखापरीक्षक – प्रथम पुरस्कार
2. श्री हरिओम, लेखापरीक्षक – प्रथम पुरस्कार
3. श्री आशीष कुमार पाण्डेय, लेखापरीक्षक – द्वितीय पुरस्कार
4. श्री अशोक कुमार, लेखापरीक्षक – द्वितीय पुरस्कार

हिन्दी पखवाड़ा–2015 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के लिए पुरस्कार से सम्मानित कार्मिकों के नाम

निबंध प्रतियोगिताः

1. श्री गोविन्द कु. सिंह, स.ले.प.अधि. – प्रथम पुरस्कार
2. श्री पवन कोठारी, लेखापरीक्षक – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री रजनीश शर्मा, स.ले.प.अधि. – तृतीय पुरस्कार

अनुवाद प्रतियोगिताः

1. श्री अनुज सिंह, स.ले.प.अधि. – प्रथम पुरस्कार
2. श्री गोविन्द कु. सिंह, स.ले.प.अधि. – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री अरविन्द कु. उपाध्याय, लेखापरीक्षक – तृतीय पुरस्कार

टिप्पण–प्रारूपणः

1. सुश्री हेमलता गुप्ता, लेखापरीक्षक – प्रथम पुरस्कार
2. श्री जितेन्द्र सिंह, लेखापरीक्षक – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री हरिओम, लेखापरीक्षक – तृतीय पुरस्कार

वाद–विवादः

1. श्री संतोष कु. गुप्ता, स.ले.प.अधि. – प्रथम पुरस्कार
2. श्री अशोक कुमार, स.ले.प.अधि. – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री विश्व प्रकाश सिंह, लेखापरीक्षक – तृतीय पुरस्कार

कविता पाठः

1. श्री अरविन्द कु. उपाध्याय, लेखापरीक्षक – प्रथम पुरस्कार
2. श्री संतोष कु. गुप्ता, स.ले.प.अधि. – द्वितीय पुरस्कार
3. श्री अश्विनी कु. पाण्डेय, स.ले.प.अधि. – तृतीय पुरस्कार

विदाई

1. श्री सी.एस.त्रिपाठी, व.ले.प.अधि.
2. श्री दिनेश कुमार, पर्यवेक्षक
3. श्रीमति नीरजा बिष्ट, स.ले.प.अधि.
4. श्री मदन सिंह गर्ब्याल, व.ले.प.अधि.

'प्रयास' परिवार इनके सुखद भविष्य की कामना करता है।

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) उत्तराखण्ड, देहरादून

राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग संबंधी विशेष रिपोर्ट

कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति (रा०का०स०) का गठन किया गया है, जिसका विवरण निम्न प्रकार है–

अध्यक्ष : श्री सौरभ नारायन, महालेखाकार

क्र.सं.	सदस्य	अनुभाग
1	वरिष्ठ उप महालेखाकार (उपाध्यक्ष, रा०का०स०)	प्रशासन / सामाजिक क्षेत्र
2	उप महालेखाकार	राजस्व / सामान्य क्षेत्र
3	उप महालेखाकार	आर्थिक क्षेत्र / वित्तीय लेखापरीक्षा स्कंध
4	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	आई.टी.ए. / पी.ए.सी.
5	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	रिपोर्ट
6	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	सामान्य खण्ड
7	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	आर्थिक क्षेत्र–II
8	लेखापरीक्षा अधिकारी	स्थानीय निकाय
9	लेखापरीक्षा अधिकारी	सामाजिक सेक्टर
10	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	प्रशासन
11	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	जी.डी. / हिंदी / पुस्तकालय / आई.टी.
12	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	पी.सी. / परीक्षा एवं प्रशिक्षण
13	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	राजस्व
14	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	वित्तीय लेखापरीक्षा स्कंध
15	लेखापरीक्षा अधिकारी	आर्थिक क्षेत्र–I
16	हिंदी अधिकारी एवं सदस्य सचिव	हिंदी / पुस्तकालय
17	कनिष्ठ हिंदी अनुवादक	हिंदी

1. राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति की समीक्षा हेतु प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है और प्रगति रिपोर्ट राजभाषा विभाग को ऑनलाइन प्रेषित की जाती है। विभागाध्यक्ष की अध्यक्षता में आयोजित बैठकों में कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग, प्रचार–प्रसार और विकास संबंधी निर्णय लिए जाते हैं।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक

2. प्रत्येक तिमाही में 'हिंदी कार्यशाला' आयोजित करने का प्रावधान है। गत वर्ष इसका शत प्रतिशत अनुपालन किया गया जिसमें 'राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन','हिंदी टंकण', 'यूनिकोड', 'हिंदी टिप्पण–प्रारूपण' आदि विषयों पर कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रशिक्षित किया गया।

हिंदी कार्यशालाएं

3. वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्य के अनुसार कार्यालय के समस्त अनुभागों में से 25 प्रतिशत का वर्ष में निरीक्षण किया जाना अनिवार्य है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए इस कार्यालय में प्रत्येक तिमाही में एक अनुभाग का हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित निरीक्षण किया गया।

4. भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में दिए गए लक्ष्य के अनुसार कार्यालय के 06 अनुभागों को पूर्णतया हिंदी में कार्य करने हेतु विनिर्दिष्ट किया गया है। ये अनुभाग हैं–

(i) सामान्य क्षेत्र (ii) आई०टी०

(iii) हिंदी एवं पुस्तकालय (iv) पी०ए०सी०

(v) आई०टी०ए० (vi) स्थानीय निकाय

5. राजभाषा नियम 1976 के नियम 10 (4) के तहत किसी भी कार्यालय के 80 प्रतिशत से अधिक अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त होने पर कार्यालय को अधिसूचित किया जाना चाहिए। इसके अनुसरण में इस कार्यालय को भी नियम 10 (4) के तहत अधिसूचित किया गया है। उक्त संदर्भ में नियम 8(4) के तहत विभागाध्यक्ष द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रवीणता प्राप्त सभी कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने हेतु आदेश जारी किया गया है।

6. गत वर्ष भारत के महासर्वेक्षक की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, देहरादून (कार्या0–1)द्वारा आयोजित प्रत्येक छमाही बैठक में कार्यालय प्रमुख तथा हिंदी अधिकारी ने भाग लिया।

7. हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति हेतु वर्ष 2014–15 के लिए हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत हिंदी में मूल कार्य करने वाले 05 अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए गए।

8. नवनियुक्त/अप्रशिक्षित डाटा एंट्री ऑपरेटरों को केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान,नई दिल्ली द्वारा आयोजित 40 कार्य दिवसीय हिंदी टंकण प्रशिक्षण (गहन) प्रदान किया गया।

9. दिनांक 14.09.2015 को हिंदी दिवस के अवसर पर कार्यालय की वार्षिक गृह पत्रिका 'प्रयास' के पंचम अंक का विमोचन महालेखाकार (लेखापरीक्षा) व महालेखाकार (ले०व हक०) द्वारा किया गया।

10. हिंदी पखवाड़ा 2015 का आयोजन दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर 2015 तक किया गया। 'हिंदी दिवस' समारोह की शोभा बढ़ाते हुए कार्यालय की महिला कर्मचारियों/अधिकारियों ने संयुक्त रूप से प्रस्तुतियाँ दीं और अलग–अलग रंगोलियाँ बनाकर कार्यक्रम को सुशोभित किया।

11. हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी, जिनमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। समापन समारोह के दिन प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को अधिकारियों ने पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया।

हिंदी पखवाड़ा का समापन समारोह

12. दिनांक 26 अक्टूबर 2015 से 31 अक्टूबर 2015 तक कार्यालय में 'सतर्कता जागरूकता सप्ताह' मनाया गया। सप्ताह के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं यथा –'वाद–विवाद प्रतियोगिता', स्लोगन (नारा) प्रतियोगिता', निबंध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया एवं विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।
13. 6 नवंबर 2015 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 'हिंदी निबंध' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें कार्यालय के प्रतिभागी श्री संतोष कुमार गुप्ता, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।
14. राजभाषा अधिनियम 1963 एवं राजभाषा नियम 1976 के प्रावधानों के अनुपालन हेतु हिंदी अनुभाग द्वारा जाँच बिन्दु की स्थापना की गई है।
15. गत वर्ष राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार एवं विकास को सुनिश्चित करने हेतु समय–समय पर हिंदी संगोष्ठी, कवि सम्मेलन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया।

हिंदी संगोष्ठी

कवि सम्मेलन

16. भारत सरकार, राजभाषा विभाग तथा मुख्यालय (भारत के नियंत्रक–महालेखापरीक्षक का कार्यालय, नई दिल्ली) द्वारा जारी राजभाषा संबंधी नीतियों एवं निर्देशों, वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित पत्राचार के लक्ष्य आदि की समीक्षा हेतु 04–05 जनवरी 2016 को मुख्यालय द्वारा इस कार्यालय का निरीक्षण किया गया।

कार्यालय में राजभाषा की गतिविधियों से संबंधित यह विशेष रिपोर्ट महालेखाकार (लेखापरीक्षा) के अनुमोदन से जारी है और यह रिपोर्ट कार्यालय की वेबसाइट www.agu.cag.gov.in पर ऑडिट विंग के विविध प्रतिवेदनें> अन्य विविध प्रतिवेदनें साइट पर उपलब्ध है।

अनुभव

(अनुभव कुमार सिंह)

दिनांक : 16 जून 2016

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

विशिष्ट वर्ग शब्दावली

black economy	–	काली अर्थव्यवस्था
devaluation	–	अवमूल्यन
dies non	–	अकार्य दिवस
diglot edition	–	द्विभाषिक संस्करण
ephemeral file	–	अल्पकालिक फाइल
eradicate	–	समाप्त करना
errors and omissions	–	भूल चूक
hard and fast rules	–	पक्के नियम
hard currency	–	दुर्लभ मुद्रा
hierarchy	–	पदानुक्रम
in-service training	–	सेवाकालीन प्रशिक्षण
joint concurrence	–	संयुक्त सहमति
keep-out pricing	–	लागत से कम मूल्य निर्धारण
leasehold	–	पट्टे पर
non-statutory	–	असांविधिक

अन्य कार्यालयीन गतिविधियाँ

Printed at Shiva Offset Press, Dehradun Ph. 0135-2715748